हम यीशु में विश्वास करते हैं

अध्याय 5

राजा

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय...1
पुराने नियम की पृष्ठभूमि 2
योग्यताएँ...2
मूसा की व्यवस्था 2
दाऊद के साथ बाँधी वाचा...5
कार्य...5
न्याय...6
दया...7
विश्वासयोग्यता 9
अपेक्षाएँ...10
ऐतिहासिक विकास 10
विशेष भविष्यद्वाणियाँ..15
यीशु में पूर्णता...17
योग्यताएँ...18
परमेश्वर द्वारा चुना हुआ 18
इस्राएली...18
परमेश्वर पर निर्भर होना...19
वाचाई विश्वासयोग्यता..19
दाऊद का पुत्र 21
कार्य...21
न्याय...21
दया...22
विश्वासयोग्यता 25
अपेक्षाएँ...27
दाऊद का राजवंश 27
स्वतंत्रता और विजय 28
अनंतकालीन राज्य..29
विश्वव्यापी राज्य...31
आधुनिक उपयोग..31
वह अपने राज्य का निर्माण करता है...32
लक्ष्य...32

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रकटीकरण.. 33
तरीके.. 35
वह अपने लोगों को संचालित करता है...36
वह शासन करता है.. 37
वह रक्षा करता है 37
वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है...38
उपसंहार.. 41

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परिचय

मनुष्यजाति का इतिहास अक्सर शक्तिशाली राजाओं के शासन के अनुसार लिखा गया है। हम सबने उन राजाओं के बारे में सुना है, जिन्होंने एशिया, यूरोप, अफ्रीका और लेटिन अमेरिका के विशाल भागों में राज्य किया है। उनमें से कुछ ने अपने बहुत से शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जिससे उनका राज्य पृथ्वी के दूर-दराज के कोनों तक फैला हुआ था। और उन सब में एक बात साझी है। वे सब चले गए हैं; वे सब मर चुके हैं; वे अब शासन नहीं करते हैं। उनकी शक्तिशाली सेनाएँ गायब हो गई हैं, और उनकी शक्ति ओझल हो गई है।

इस नियम में केवल एक अपवाद रहा है। केवल एक राजा ऐसा है जिसकी शक्ति कभी फीकी नहीं पड़ी है, और जिसके राज्य का कभी अंत नहीं होगा। और निस्संदेह वह राजा यीशु है।

यह हमारी श्रृंखला हम यीशु में विश्वास करते हैं, का पाँचवाँ अध्याय है और हमने इसका शीर्षक “राजा” दिया है। इस अध्याय में, हम देखेंगे कि कैसे यीशु परमेश्वर के विश्वासयोग्य सेवक और पुत्र के रूप में शासन करने के द्वारा पुराने नियम के राजा के कार्यभार को पूरा करता है। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा है, पुराने नियम के इतिहास के विभिन्न चरणों में परमेश्वर ने तीन कार्यभारों को स्थापित किया था जिनके द्वारा उसने राज्य को संचालित किया; वे थे, भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के कार्यभार। और परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण में, जिसे हम सामान्यतः नए नियम का युग कहते हैं, ये तीनों कार्यभार यीशु में अपनी संपूर्ण पूर्णता को पाते हैं। इस अध्याय में, हम यीशु के राजा के कार्यभार पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

हमारे उद्देश्यों के लिए, हम राजा को इस प्रकार परिभाषित करेंगे :

> एक ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने अपने बदले अपने राज्य पर शासन करने के लिए स्थापित किया हो।

जैसे कि यह परिभाषा संकेत करती है, परमेश्वर सर्वदा से और सर्वदा के लिए अपनी संपूर्ण सृष्टि का परम शासक रहेगा। परंतु उसने मनुष्यों को भी नियुक्त किया है कि वे उसके राज्याधिकारियों के रूप में सेवा करें। ये मानवीय राजा उसकी अधीनता में सेवा करते हैं और उसके राज्य के उसके उद्देश्यों और लक्ष्यों को आगे बढ़ाते हैं। जब हम इस मौलिक परिभाषा को अपने ध्यान में रखते हैं, तो हम बाइबल में वर्णित राजा के कार्यभार के विषय में बहुत से विचारों को प्राप्त कर सकेंगे, और इस विषय में भी कि यीशु इस कार्यभार को कैसे पूरा करता है।

यह अध्याय उसी रूपरेखा का अनुसरण करेगा जिसका अनुसरण हमने यीशु के याजक और भविष्यद्वक्ता के कार्यभारों के अध्यायों में किया था। पहला, हम राजा के कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि की जाँच करेंगे। दूसरा, हम यीशु में राजा के कार्यभार की पूर्णता की खोज करेंगे। और तीसरा, हम हमारे अपने जीवनों में यीशु के राजत्व के आधुनिक उपयोग की खोज करेंगे। आइए पहले हम यीशु के कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि को देखें।

पुराने नियम की पृष्ठभूमि

अपनी पुस्तक *द रिपब्लिक* में यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने तर्क दिया है कि सभी सर्वोत्तम सरकारों के शासन में सबसे श्रेष्ठ शासन एक दार्शनिक राजा का था। उसके दृष्टिकोण में, जो राजा धन-संपत्ति और शक्ति की अपेक्षा बुद्धि से सचमुच अधिक प्रेम करते थे, उन्होंने अपने राष्ट्रों की अगुवाई अनगिनित लाभों की ओर की है। इसी तरह से, पवित्रशास्त्र यह दर्शाता है कि जब इस्राएल के राजा परमेश्वर का भय रखते थे और उसकी विधियों को मानते थे, तो उनके राष्ट्रों ने परमेश्वर की आशीषों में उन्नति की। परंतु इसका विपरीत परिणाम भी पाया जाता था : जब उन्होंने परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह किया, तो संपूर्ण राष्ट्र को परमेश्वर के दंड के अधीन कष्ट सहना पड़ा। इस भाव में, इस्राएल के राजा पृथ्वी पर परमेश्वर के अच्छे संचालन के विषय में मुख्य स्थान रखते थे।

हम राजा के कार्यभार की पुराने नियम की पृष्टभूमि की जाँच तीन विषयों को देखने के द्वारा करेंगे : पहला, राजा के कार्यभार के लिए योग्यताएँ; दूसरा, राजाओं के कार्य; और तीसरा, वे अपेक्षाएँ जिनकी रचना पुराने नियम ने इस्राएल में राजत्व के भविष्य के लिए कीं। आइए हम राजा के कार्यभार की योग्यताओं से आरंभ करें।

योग्यताएँ

पुराने नियम में, परमेश्वर ने राजा के कार्यभार की योग्यताओं को दो चरणों में प्रकट किया है। पहला, मूसा कि व्यवस्था में परमेश्वर ने इस्राएल में राजा की नियुक्ति से पहले ही राजा के कार्यभार के मानकों को प्रकट किया। और दूसरा, राजतंत्र की स्थापना के बाद दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा ने एक महत्वपूर्ण अतिरिक्त योग्यता को प्रदान किया। आइए पहले हम मूसा की व्यवस्था में दर्शाए गए राजत्व के सिद्धांतों को देखें।

मूसा की व्यवस्था

> जब आप पुराने नियम, विशेषकर पहली पाँच पुस्तकों, अर्थात् पंचग्रंथ, को पढ़ते हैं, तो यह देखना रूचिकर है कि वहाँ पहले से ही एक राजा के आगमन का पूर्वानुमान लगाया गया है। राजाओं के अस्तित्व के बहुत पहले से ही आपको पता है कि एक राजा कैसा होना चाहिए और उसे क्या करना चाहिए। ऐसा क्यों है? मैं सोचता हूँ कि हमें ऐसे अनुच्छेदों को, विशेषकर व्यवस्थाविवरण 17 को परमेश्वर की योजना के प्रकाश में रखना चाहिए, जहाँ आपके पास राजा के आगमन का पूर्वानुमान है, और यह कि राजा को क्या करना चाहिए। आपको वास्तव में आदम की ओर लौटना होगा। आदम एक भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में कार्य करता है। इस पृथ्वी पर उसका अधिकार, और शासन और राजत्व किसी न किसी तरह खो गया है। इसे अब्राहम की वाचा में इस्राएल के राष्ट्र में फिर से उठाया गया है। यहाँ तक कि उत्पति 17 में ऐसी प्रतिज्ञाएँ हैं कि अब्राहम के वंश से राजा उत्पन्न होंगे। यह तब इस्राएल में पूर्ण होना आरंभ होता है और विशेषकर राजाओं में। यद्यपि पुराने नियम में राजा की घोषणा समय से बहुत वर्षों पहले मूसा के साथ व्यवस्थाविवरण 17 में हो गई थी, यह हमें इस संसार पर पाप के प्रभावों के वापस आने के लिए, राजाओं, अर्थात् दाऊदवंशी राजाओ के द्वारा आने वाली पुनर्स्थापना के लिए तैयार कर रहा है। परंतु इन सबसे बढ़कर, प्रभु यीशु मसीह का आगमन है, जो अब इन भूमिकाओं को लेता है, दाऊदवंशी भूमिका को पूरा

> करता है, इस्राएल की भूमिका को पूरा करता है, और अंततः आदम की भूमिका को पूरा करता है, और हमें वैसे पुनर्स्थापित करता है जो बनने के लिए हमारी रचना की गई थी, यह सब भविष्य में होने वाला है। यह सब कुछ हमें परमेश्वर की उस योजना के संबंध में और अधिक के लिए स्थापित कर रहा है जो प्रकट होती जाती है, यह हमारी अगुवाई "यह है वह जो आएगा, यह है वह जो घटित होगा, इस प्रकार राजा उन भूमिकाओं को पूरा करेगा" के मसीहा-संबंधी विषय की ओर करेगा। मैं सोचता हूँ कि यह सब ही वह कारण है कि क्यों मूसा हमें यह राजाओं के आने से पहले ही दे रहा है।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

जब मूसा ने इस्राएल राष्ट्र को प्रतिज्ञा की भूमि में प्रवेश करने और उस पर विजय प्राप्त करने के लिए तैयार किया, तो उसने स्पष्ट किया कि परमेश्वर अंततः उन पर एक राजा को स्थापित करेगा। और उसने ऐसे चार सिद्धांतों को दर्शाया जिनसे परमेश्वर द्वारा स्थापित राजा को अगुवाई प्राप्त करनी थी। सुनिए व्यवस्थाविवरण 17:14-19 में मूसा ने क्या लिखा :

> जब तू उस देश . . . जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, और तू . . . उनमें बसकर कहने लगे, कि . . . मैं भी अपने ऊपर राजा ठहराऊँगा; तब जिसको तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले अवश्य उसी को राजा ठहराना। अपने भाइयों ही में से किसी को अपने ऊपर राजा ठहराना . . . वह बहुत घोड़े न रखे, और न इस मनसा से अपनी प्रजा के लोगों को मिस्र में भेजे कि उसके पास बहुत से घोड़े हो जाएँ . . . वह बहुत स्त्रियाँ भी न रखे . . . और न वह अपना सोना रूपा बहुत बढ़ाए . . . इसी व्यवस्था की पुस्तक . . . की एक नकल अपने लिये कर ले . . . और अपने जीवन भर उसको पढ़ा करे, जिससे वह अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, और इस व्यवस्था और इन विधियों की सारी बातों के मानने में चौकसी करना सीखे। (व्यवस्थाविवरण 17:14-19)

मूसा ने राजतंत्र से संबंधित चार सिद्धांतों का वर्णन यहाँ किया है। पहला, उसने कहा कि इस्राएल का राजा परमेश्वर की ओर से चुना हुआ होना चाहिए। लोग ऐसा राजा चुनने के योग्य नहीं थे जो परमेश्वर की अपेक्षा के अनुसार उनकी अगुवाई करता। और उनके पास यह अधिकार भी नहीं था कि वे परमेश्वर द्वारा प्रदत अधिकार किसी व्यक्ति को सौंपें। केवल परमेश्वर ही अपना अधिकार किसी को दे सकता था। और वह इसे उस व्यक्ति को ही देगा जो उसके द्वारा चुना गया हो।

व्यवस्थाविवरण 17 में जिस दूसरी बात का उल्लेख मूसा ने किया है, वह यह थी कि राजा का इस्राएली होना आवश्यक था। कहने का अर्थ यह है कि उसे परमेश्वर के चुने हुए राष्ट्र में से होना आवश्यक था। यह उस वाचाई प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए था जो परमेश्वर ने उत्पति 17:1-8 में अब्राहम के साथ बाँधी थी, जहाँ उसने शपथ खाई थी कि अब्राहम के वंशज उसके लोगों के ऊपर राजा होंगे।

व्यवस्थाविवरण 17 में तीसरी योग्यता यह थी कि राजा शांति और खुशहाली को स्थापित करने के लिए मानवीय रणनीतियों की अपेक्षा परमेश्वर पर निर्भर रहेगा। मूसा ने उन चार तरीकों का वर्णन किया जिनमें राजा परमेश्वर पर निर्भर रहने से दूर हो सकता था।

- राजा को शायद इसलिए बड़ी संख्या में घोड़े रखने से मना किया गया था, क्योंकि वे सेना के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। राजा को राष्ट्र की सुरक्षा के लिए परमेश्वर के सामर्थ्य पर निर्भर रहना था न कि मानवीय बल पर।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

- मिस्र को लौटने पर प्रतिबंध ने सुरक्षा और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमेश्वर के अधीन रहने की अपेक्षा बड़े साम्राज्य के अधीन होने के प्रतिबंध को दर्शाया।
- अधिक पत्नियों को रखने का प्रतिबंध शायद विशेष रीति से विवाहों के द्वारा स्थापित राजनैतिक गठबंधनों के विषय में था। यह केवल इसलिए एक समस्या नहीं थी कि इसने इस्राएल को परमेश्वर पर निर्भर रहने की अपेक्षा अन्य विदेशी राष्ट्रों पर निर्भर किया, बल्कि इसलिए भी कि विदेशी पत्नियाँ संभवतया विदेशी देवताओं की पूजा करतीं और राजा को भी उनकी पूजा करने की परीक्षा में डालतीं।
- और अधिक मात्रा में सोने और चाँदी को इकट्ठा करने के विरूद्ध आज्ञा शायद अन्याय से लिए जाने वाले कर को दर्शाती है। राजा के लिए धनी होना गलत नहीं था। परंतु परमेश्वर के लोगों का शोषण करने के द्वारा धनी बनना उसके लिए अपराध था।

सारांश में, इन प्रतिबंधों ने आश्वस्त किया कि राजा अपने शासन की सफलता और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहे।

वह चौथी बात जिस पर मूसा ने व्यवस्थाविवरण 17 में बल दिया है, यह है कि राजा को परमेश्वर की वाचाई व्यवस्था को ग्रहण करने, उसकी प्रति बनाकर रखने और उस पर मनन करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति वाचाई विश्वासयोग्यता को प्रकट करना आवश्यक था। इन कार्यों की रचना व्यक्तिगत सम्मान, उपयुक्त नम्रता और विश्वासयोग्य शासन के लिए की गई थी।

> इस्राएल के राजा और यहूदा के राजा परमेश्वर के प्रति लोगों के प्रतिनिधि थे, इसलिए कई रूपों में उनके पास पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रतिनिधियों के रूप में और परमेश्वर के प्रति लोगों के प्रतिनिधियों के रूप में संस्कार-संबंधी उपस्थिति थी। अतः वह विशेष दोहरा पद जो उनके पास था, इस रूप में महत्वपूर्ण था कि किस प्रकार परमेश्वर ने राजा को प्रत्युत्तर दिया और फिर अंततः पूरे राष्ट्र पर इसका क्या प्रभाव पड़ा। और मैं सोचता हूँ कि आपके पास इस्राएल और यहूदा में पूरा इतिहास है। इस्राएल में कोई अच्छा राजा नहीं था। वे सारे के सारे बुरे थे। और तब 722 ई. पू. में उनका पहला पतन हुआ। परंतु तब यहूदा में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के राजा थे, तो अच्छे राजा ने प्रभु की दृष्टि में अच्छा किया, और बुरे राजा ने प्रभु की दृष्टि में बुरा किया। परंतु जब बुरे राजाओं ने प्रभु की दृष्टि में बुरा किया तो उनके कार्यों की बड़ी प्रतिक्रियाएँ निकल कर आईं। यह वह समय था जब परमेश्वर के दंड की दैवीय "नहीं" उस समय के राजाओं और लोगों दोनों के विरुद्ध प्रकट हुई। और ऐसा प्रतीत होता है कि राजा के पद और लोगों द्वारा उसके अनुसरण के बीच एक गहरा संबंध था। यदि राजा ऊँचे स्थानों को स्थापित कर रहा था और विदेशी देवताओं की पूजा कर रहा था, तो लोग भी ऐसा ही कर रहे थे। और फिर इसके विपरीत भी था; जब वहाँ पर सुधार हुए, जैसा कि हम राजा योशिय्याह के साथ पाते हैं तो उसके प्रति बड़ी राष्ट्रीय प्रतिक्रियाएँ हुईं जिसमें लोगों ने परमेश्वर और उसकी व्यवस्था के प्रति प्रतिक्रिया दी। अतः राजा के पास लोगों का प्रतिनिधित्व करने की और लोगों के समक्ष परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने की मुख्य भूमिका थी।
>
> — डॉ. मार्क गिगनीलियट

मूसा के द्वारा प्रकट राजत्व की योग्यताओं को देखने के बाद, हम अब उस अतिरिक्त योग्यता के बारे में विचार करेंगे जिसे परमेश्वर ने दाऊद के साथ बाँधी अपनी वाचा में स्थापित किया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दाऊद के साथ बाँधी वाचा

परमेश्वर ने 2 शमूएल 7:8-16 में दाऊद के साथ अपनी वाचा को स्थापित किया, और इसकी शर्तों का उल्लेख भजन 89 और 132 जैसे स्थानों में किया गया है। इस वाचा ने दाऊद के वंशजों को इस्राएल पर स्थाई राजवंश के रूप में स्थापित किया। परमेश्वर ने इस आश्वासन के द्वारा दाऊद और इस्राएल के प्रति एक बड़ी भलाई को प्रदर्शित किया कि दाऊद के वंशज राज्य करेंगे, और इस्राएल इस राजवंशीय उत्तराधिकार की स्थिरता का आनंद लेगा। 2 शमूएल 7:8-16 में दाऊद के साथ की गईं परमेश्वर की वाचाई प्रतिज्ञाओं को सुनिए:

> मैं ने तो तुझे भेड़शाला से, और भेड़-बकरियों के पीछे पीछे फिरने से . . . बुला लिया कि तू मेरी प्रजा इस्राएल का प्रधान हो जाए . . . मैं तेरे नाम को . . . महान कर दूँगा। और मैं अपनी प्रजा इस्राएल के लिये एक स्थान ठहराऊँगा . . . मैं तुझे तेरे समस्त शत्रुओं से विश्राम दूँगा . . . मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूँगा . . . तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदैव बनी रहेगी। (2 शमूएल 7:8-16)

इस ईश्वरीय वाचा के अनुसार परमेश्वर ने इस्राएल के राजाओं के लिए एक नई योग्यता को जोड़ा : इस समय से परमेश्वर के लोगों की अगुवाई दाऊद के पुत्र के द्वारा होनी थी। केवल उसी का घराना पूरे राष्ट्र पर वैधानिक रूप से निरंतर शासन का दावा कर सकता था।

उत्पत्ति की पुस्तक में ही, परमेश्वर ने यहूदा के घराने को इस्राएल के राजत्व की आशीष दी। याकूब ने उत्पत्ति 49 में कहा है। "यहूदा से राजदंड न छूटेगा।" क्योंकि दाऊद यहूदा के गोत्र से था, इसलिए दाऊद से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा उत्पत्ति में दी गई आशीष की पूर्णता थी। परमेश्वर हमेशा से यह चाहता था कि इस्राएल में एक दिन यहूदा के गोत्र से एक राजा होगा। दाऊद की आज्ञाकारिता और परमेश्वर के प्रति उसकी भक्ति के कारण, उसने प्रतिज्ञा की कि इस्राएल का राजत्व निरंतर दाऊद के वंश के द्वारा खोजा जाएगा। इस्राएल में कोई भी व्यक्ति तब तक वैधानिक तौर पर राजा होने का दावा नहीं कर सकता था जब तक वह दाऊद के घराने से न हो। इसीलिए सुसमाचारों के लेखकों के लिए यह महत्वपूर्ण था कि वे न केवल यह प्रमाणित करें कि यीशु परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया था, बल्कि यह भी कि वह दाऊद के सिंहासन के वैधानिक दावे के साथ दाऊद का वास्तविक वशंज था।

अब जबकि हमने राजा के कार्यभार की योग्यताओं को देख लिया है, इसलिए आइए अब हम हमारे अपने दूसरे विषय अर्थात् पुराने नियम में राजाओं के कार्य की ओर मुड़ें।

कार्य

पुराने नियम में, इस्राएल के राजाओं ने प्राथमिक रूप से परमेश्वर की व्यवस्था को लागू करने और इसका संचालन करने के द्वारा परमेश्वर के लोगों पर विश्वासयोग्य रूप से शासन किया। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा है, प्राचीन मध्य पूर्व में शक्तिशाली सम्राटों या सुजेरियन राजाओं के द्वारा कमजोर राज्यों पर विजय प्राप्त करके उन्हें सेवक या वासल राजा बना लेना सामान्य बात थी। इन सुजेरियन राजाओं ने सामान्यतः संधियों या वाचाओं के द्वारा वासल राजाओं के साथ अपने संबंधों को संचालित किया, जिसमें वासल राजाओं को विजयी सुजेरियन राजा के अधीन रहकर उसके कानून के अनुसार उनकी सेवा करनी थी। यही बात परमेश्वर के साथ इस्राएल के संबंध में भी थी। पूरा राष्ट्र परमेश्वर की वाचा की आज्ञा का पालन करने के लिए जिम्मेदार था, और राजा को यह सुनिश्चित करना था कि वे ऐसा करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राजाओं ने कई तरीकों से अपने लोगों को परमेश्वर की वाचाई व्यवस्था के प्रति लोगों को जिम्मेदार ठहराया। परंतु इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम उन पर ध्यान देंगे जिन्हें यीशु ने व्यवस्था के अधिक महत्वपूर्ण विषय कहा था। जैसा कि यीशु ने मत्ती 23:23 में कहा है :

> व्यवस्था की गंभीर बातें . . . न्याय, और दया, और विश्वास हैं। (मत्ती 23:23)

यीशु के अनुसार, और रस्मों और रीतियों पर फरीसियों द्वारा महत्व देने के विपरीत, व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताएँ न्याय, दया और विश्वासयोग्यता हैं।

हम उन तरीकों पर ध्यान देंगे जिनमें पुराने नियम के राजाओं ने इन तीनों महत्वपूर्ण विशेषताओं के अनुसार परमेश्वर की व्यवस्था को लागू और संचालित किया। पहला, हम न्याय को लागू करने की राजा की जिम्मेदारी पर ध्यान देंगे। दूसरा, हम देखेंगे कि राजा को दया को लागू करना था। और तीसरा, हम इस वास्तविकता पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि राजा को विश्वासयोग्यता को बढ़ाना था। आइए पहले हम न्याय को लागू करने के राजा के कार्य को देखें।

न्याय

राजा की जिम्मेदारियों के संदर्भ में, न्याय की परिभाषा परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का उसकी योग्यता के अनुरूप न्याय करने के रूप में दी जा सकती है।

> लोगों या शासकों के रूप में हमारे पास सुरक्षित राह चुनने या एक पापमय राह चुनने का अधिकार और स्वतंत्रता और इच्छा है। अंत में, परमेश्वर का दंड हम सब पर आएगा। फलस्वरूप उन शासकों को दंड मिलेगा। जब यीशु आएगा तो वह सब चीजों को वहीं रखेगा जहाँ उन्हें होना चाहिए। तब तक हमारे पास एक मिशन है। और यह मिशन ऐसा है कि हम ऐसे लोगों के समान जीएँ जो परमेश्वर के राज्य से संबंधित हो, और स्वर्गिक पृथ्वी के नागरिकों के समान जीएँ। कुछ समय के लिए, हम न्याय और समानता को काम में लाते हैं, दूसरों का आदर करते हैं, निर्बलों का सम्मान करते हैं, अन्यायियों के साथ निष्पक्ष होते हैं, और हम यह जानते हुए न्याय को लागू करने का कड़ा प्रयास करते हैं कि हम अभी भी पापमय संसार में, एक टूटे हुए संसार में, परमेश्वर के दंड के अधीन संसार में रहते हैं, हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जहाँ निर्दयता, गरीबी, अज्ञानता और भ्रष्टता अभी भी हैं। हमें उस मोमबत्ती के समान हैं जो प्रकाश देती है, और दूसरों को यह स्मरण कराती है कि स्वर्ग में एक प्रेम करने वाला परमेश्वर है जो उनकी देखभाल करता है जिनके साथ अन्याय हुआ है और कि यह निर्दयता, भ्रष्टता और अहंकार अस्थाई है, चाहे यह पृथ्वी पर कितना भी पुराना क्यों न हो, और यह समय में सीमित भी है, क्योंकि एक ऐसा परमेश्वर है, जो अंततः सब बातों को ठीक कर देगा।
>
> — डॉ. जोनाथन कुताब, अनुवाद

इस्राएल के राजाओं को कम से कम दो विभिन्न स्तरों पर परमेश्वर के न्याय को क्रियान्वित करना था। सबसे पहले, उन्होंने परमेश्वर के अंतर्राष्ट्रीय न्याय को क्रियान्वित किया, जिसमें परमेश्वर की व्यवस्था को इस्राएल और अन्य राष्ट्रों के बीच लागू किया।

एक तरीका जिसमें राजाओं ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर न्याय को लागू किया, वह था अन्य राष्ट्रों के साथ शांतिपूर्वक समझौता, जैसे कि 1 राजाओं 5:1-12 में सुलैमान ने सोर के राजा हीराम के साथ किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राजाओं ने युद्ध के द्वारा भी अंतर्राष्ट्रीय न्याय को लागू किया। उन्होंने ऐसा दुष्ट राष्ट्रों को दंड देने के द्वारा किया जैसा कि शाऊल ने 1 शमूएल 14:47-48 में, और दाऊद ने 2 शमूएल 8:1-13 में किया। राजा ने इस्राएल की सुरक्षा भी की जब उन पर आक्रमण किया गया, जैसा कि दाऊद ने 2 शमूएल 5:17-25 में और हिजकिय्याह ने 2 राजाओं 19 में किया। भजन 2 उस न्याय को सारगर्भित करता है जिसे इस्राएल के राजाओं को उन राष्ट्रों के प्रति दर्शाना था जिन्होंने उनके और प्रभु के विरुद्ध विद्रोह किया था। सुनिए पद 6-12 में यह क्या कहता है :

> [यहोवा ने कहा,] "मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर बैठा चुका हूँ।" . . . यहोवा ने मुझ से कहा, "तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ। मुझ से माँग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिये, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिये दे दूँगा। तू उन्हें लोहे के डण्डे से टुकड़े टुकड़े करेगा, तू कुम्हार के बर्तन के समान उन्हें चकनाचूर कर डालेगा।" इसलिये अब, हे राजाओ, बुद्धिमान बनो; हे पृथ्वी के न्यायियो, यह उपदेश ग्रहण करो। डरते हुए यहोवा की उपासना करो, और काँपते हुए मगन हो। पुत्र को चूमो, ऐसा न हो कि वह क्रोध करे, और तुम मार्ग ही में नष्ट हो जाओ, क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भड़कने को है। धन्य हैं वे जिनका भरोसा उस पर है। (भजन संहिता 2:6-12)

ये पद सुजेरियन राजा को पिता के रूप में दर्शाने और उसके वासल राजा को उसके पुत्र के रूप में दर्शाने की प्राचीन मध्य पूर्वी रीति का अनुसरण करते हैं। इस विषय में, परमेश्वर सुजेरियन राजा था और दाऊदवंशी राजा पुत्र था। और संसार के लिए परमेश्वर की योजना यह थी कि जाति-जाति के लोग दाऊदवंशी राजाओं की सेवा करें और उनकी आज्ञा मानें। उन्हें उसका भय मानना और सम्मान करना था क्योंकि वह इस संसार में परमेश्वर के न्याय का माध्यम था।

दूसरा, राजा इस्राएल के भीतर ही राष्ट्रीय स्तर पर परमेश्वर के न्याय को क्रियान्वित करने के प्रति जिम्मेदार थे। राजाओं ने परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता में परमेश्वर के विशेष लोगों की अगुवाई करने के द्वारा राष्ट्रीय न्याय को लागू किया। इसमें कमजोर लोगों की देखभाल और उनकी सुरक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करना, जैसा कि हम नीतिवचन 29:14 में देखते हैं; दुष्टों से सुरक्षा, जैसा कि दाऊद ने 2 शमूएल 4:9-12 में दर्शाया; अपराधियों को दंड देना, जैसा कि 2 राजा 14:5 में पाया जाता है; और नागरिकों के विकास और उनकी खुशहाली के लिए स्थिरता को स्थापित करना, जैसा कि भजन संहिता 72 सिखाता है, जैसी बातें शामिल थीं। यही नहीं, राजाओं को गरीबों या धनी लोगों का पक्ष लेकर न्याय को विकृत नहीं करना था। पवित्रशास्त्र लैव्यव्यवस्था 19:15 और यशायाह 11:1-5 सहित कई स्थानों पर राजाओं की इस भूमिका के बारे में बात करता है।

यीशु द्वारा व्यवस्था के अधिक महत्वपूर्ण विषयों को पहचानने से पुनः सीखते हुए, वह दूसरा मुख्य तरीका जिनमें राजाओं को परमेश्वर की व्यवस्था को लागू करना था, वह था दया में इसे लागू करना।

दया

दया परमेश्वर के लोगों के प्रति परमेश्वर की करुणा का कार्य है। परमेश्वर अपने लोगों की कमजोरी को समझते हुए अक्सर अपनी सृष्टि के प्रति सहनशीलता के साथ व्यवहार करता है जब वे पाप कर लेते हैं। वह उन्हें जीवन में अच्छी वस्तुएँ, और दुखों से राहत देता है, केवल इसलिए कि उसे अपनी सृष्टि के प्रति दयालु बनना प्रसन्न करता है। पवित्रशास्त्र कई स्थानों पर परमेश्वर की दया के बारे में बात करता है, जैसे भजन 40:11; भजन 103:8 और योना 4:2 में।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जैसे कि हमने न्याय के विषय में किया था, यहाँ भी हम इस वास्तविकता को दर्शाएँगे कि राजाओं को कम से कम दो क्षेत्रों में दया दिखानी थी; पहला, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, राजाओं ने दया को उन राष्ट्रों और लोगों पर लागू किया जिन्होंने परमेश्वर के इस्राएल के प्रति समर्पण किया। उदाहरण के लिए, 2 शमूएल 10:19 में, इस्राएल के एक शत्रु के बहुत से वासल राजाओं ने दाऊद से दया प्राप्त की जब उन्होंने उससे शांति स्थापित की। और 2 शमूएल 10:1-2 में दाऊद ने अम्मोनियों के राजा के प्रति करुणा दिखाई।

यही नहीं, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से ही यह बता दिया कि अन्यजातियाँ अंततः यरूशलेम के प्रति समर्पण करेंगी। वे परमेश्वर के राज्य की राजधानी में उपहार लेकर आएँगी, और परमेश्वर के राजा से सुरक्षा और दया को प्राप्त करेंगी। इन बातों की भविष्यद्वाणी यशायाह 60:1-22 और 66:18-23, मीका 4:1-8 और सपन्याह 2:11 जैसे स्थानों में की गई है।

जैसा कि हमने न्याय पर अपने विचार-विमर्श में देखा है, निस्संदेह परमेश्वर हमेशा दया दिखाना नहीं चाहता है। और कई बार उसने माँग की कि राजा दुष्ट राष्ट्रों के प्रति दया न दिखाए। उदाहरण के लिए 2 शमूएल 5:17-25 में परमेश्वर ने दाऊद को पलिश्तियों को नाश करने का निर्देश दिया, जिसे दाऊद ने बिना कोई दया दिखाए पूरा किया। उनकी बुराई इतनी अधिक थी कि उन्हें छोड़ा नहीं जाना था। इसलिए, राजा की जिम्मेदारी का एक भाग यह समझना था कि परमेश्वर कब राजा से चाहता था कि वह दया दिखाए और कब दया न दिखाए।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में दया दिखाने के अतिरिक्त राजा राष्ट्रीय स्तर पर दया दिखाने के द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था को संचालित करने के प्रति भी जिम्मेदार था। क्योंकि राजा परमेश्वर का वासल राजा था, इसलिए उससे अपेक्षा थी कि वह लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करे जैसा परमेश्वर उनके साथ व्यवहार करेगा। और इसका अर्थ था उनके साथ दयापूर्ण व्यवहार करना। जैसा कि हम होशे 6:6 जैसे स्थानों में पढ़ते हैं, परमेश्वर व्यवस्था में निहित बलिदानों से बढ़कर लोगों से चाहता था कि वे दया दिखाएँ। इसका कारण यह नहीं है कि परमेश्वर की व्यवस्था महत्वहीन है, बल्कि यह है कि दया व्यवस्था के और अधिक महत्वपूर्ण विषयों में से एक है। इसी कारणवश, एक दया से भरा हुआ राजा एक आदर्श अगुवा था, अर्थात् वह जो देखभाल के परमेश्वर के अपने नमूने का स्वरूप हो। दाऊद ने इसे 2 शमूएल 19:28-23 जैसे स्थानों में प्रकट किया है, जहाँ पर उसने उन शत्रुओं के प्रति दया दिखाई जिन्होंने उसके प्रति समर्पण कर दिया था।

> दया पुराने नियम की पूरी व्यवस्था में पाई जाती है। यदि हम अपने इस पक्षपात को एक किनारे कर दें कि व्यवस्था बुरी है और वास्तव में व्यवस्था को परमेश्वर की करूणा के एक माध्यम के रूप में पढ़ें, तो हम इसे हर स्थान पर देखना आरंभ करेंगे। अतः एक आरंभिक बिंदु के रूप में यदि हम दस आज्ञाओं को ही देखें, तो आप सब्त के दिन को पवित्र रखना के रूप में चौथी आज्ञा जैसे एक नियम को देखते हैं। हमें यह देखने के लिए उस आज्ञा के पहले भाग से आगे बढ़ना है कि प्रभु के दिन या सब्त के दिन में न केवल हमें आराम करना है, बल्कि हमें अपने घर में कार्य करने वाले सेवकों को, हमारे जानवरों को, और उन सबको भी इसकी अनुमति देनी है जो हमारे अधीन कार्य करते हैं। हमारे आधुनिक संसार में, हमारा कहना यह है कि परमेश्वर का भय रखने वाले व्यवसायी स्त्री या पुरुष को अपने कर्मचारियों के प्रति दयापूर्ण होना चाहिए, और उनके साथ इस्तेमाल किए जाने वाले संसाधनों के रूप में नहीं बल्कि लोगों के रूप में व्यवहार करना चाहिए। हम उन लोगों के भंडारी बने जिन्हें परमेश्वर ने हमारे अधीन रखा है। इसलिए यहाँ दयापूर्ण प्रबंध किया गया है। आप पुराने नियम में बहुत से अलग-अलग नियमों को पाते हैं जो दया को प्रकट करते हैं। व्यवस्थाविवरण की एक आज्ञा कि खेतों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

के किनारों में पड़े अनाज को वैसे ही छोड़ दिया जाए, इसलिए है कि जो आवश्यकता में हैं वे आकर इसे उठा लें और उनके पास खाने को कुछ हो, ताकि वे उसे उठा लें जो छोड़ दिया गया है। आपके पास पुराने नियम में और भी कई नियम हैं जैसे कि अपने देश में रहने वालों से ब्याज न लिया जाए। उस संसार में पूँजीवादी निवेश अर्थव्यवस्था नहीं थी, और ब्याज लेना अक्सर लोगों के साथ दुर्व्यवहार करने और उनका फायदा उठाने का एक तरीका था। यह उदारता का एक विकल्प बन गया था। यदि कोई आवश्यकता में पड़े अपने इस्राएली भाई से फायदा उठा सकता था, तो वह धनी बन सकता था, परंतु इससे वह दूसरों को उनके अधिकार से वंचित करने वाला होता। इसलिए आज्ञा कहती है, ऐसा न किया जाए। इसकी अपेक्षा, ब्याज न लेने के द्वारा उदार बनो, और उन्हें उधार दो जो आवश्यकता में हैं। प्रत्येक सातवें वर्ष अनुबंधपत्र से आजादी या जुबली का नियम जिसमें लोगों को उनके स्थान पर फिर से भेज दिया जाता था जहाँ से उन्हें दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों के कारण हटना पड़ा था, ये पुनर्स्थापना के नियम थे। परमेश्वर अपने लोगों के प्रति दयापूर्ण था, और तब वह उन्हें आज्ञा देता है कि वे पुराने नियम की व्यवस्था में उसके अपने चरित्र को प्रकट करें।

— रेव्ह. माइकल ग्लोडो

न्याय और दया के अतिरिक्त राजा द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था को क्रियान्वित किए जाने का तीसरा तरीका परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित करना था।

विश्वासयोग्यता

विश्वासयोग्यता को हृदय से निकलने वाले भरोसे और आज्ञाकारिता के द्वारा प्रदर्शित परमेश्वर के प्रति वफादारी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। विश्वासयोग्यता में यह विश्वास करना कि परमेश्वर वह है जो वह कहता है कि वह है, किसी और ईश्वर की नहीं बल्कि वफ़ादारी के साथ केवल उसकी सेवा करना, और उसके प्रति प्रेमपूर्ण आज्ञाकारिता को समर्पित करना सम्मिलित होता है।

जैसा कि हमने न्याय और दया के विषय में किया था, हम उन दो तरीकों पर ध्यान देंगे जिनमें राजा विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित करने के लिए जिम्मेदार था, हम अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र से आरंभ करेंगे। इस्राएल के राजाओं को परमेश्वर के लोगों की अगुवाई इस रीति से परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता में करनी थी कि उनके चारों ओर के राष्ट्र मूर्तिपूजा और पाप से पश्चाताप करें, और परमेश्वर की सेवा करना आरंभ करें। राजाओं ने इस भूमिका को विशेषकर इस्राएल राष्ट्र में विश्वासयोग्य आराधना को स्थापित करते हुए पूरा किया, जैसा कि हम 1 राजा 8:41-43 में मंदिर के समर्पण के समय सुलैमान की प्रार्थना में देखते हैं। राष्ट्रों को शिष्य बनाने और उन्हें अनुशासित करने की इस सार्वभौमिक आज्ञा को भजन 72:8-11 और जकर्याह 8:20-23 जैसे अनुच्छेदों में दर्शाया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त, राजा को राष्ट्रीय स्तर पर भी विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित करना था। राजा को विशेषकर आराधना में पवित्रता को आश्वस्त करने और उसका प्रबंध करने के द्वारा इस्राएल राष्ट्र के भीतर विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित करना था। अच्छे राजाओं ने आराधना के लिए संसाधन और योजनाओं को प्रदान किया, लोगों को संगठित किया, मंदिर के रख-रखाव के लिए नीतियों को बनाया, और अक्सर सार्वजनिक आराधना में महत्वपूर्ण भूमिकाओं को निभाया। उदाहरण के लिए, दाऊद ने 1 इतिहास 15, 16 और 23-28 में इन कार्यों को किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस्राएल की विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित करने के राजा के समर्पण ने महत्वपूर्ण रूपों में राष्ट्र को प्रभावित किया। क्योंकि वह परमेश्वर के समक्ष राष्ट्र का प्रतिनिधि था, इसलिए विश्वासयोग्य राजाओं की अगुवाई में लोगों ने अक्सर बड़ी आशीषों को और विश्वासहीन राजाओं की अगुवाई में कड़े दंड को अनुभव किया। परमेश्वर ने विश्वासयोग्य राजाओं को इस्राएल में खुशहाली और भौतिक विस्तार के साथ आशीषित किया। विश्वासहीन राजाओं को दंड भी दिया गया। वास्तव में, राजाओं की पुस्तक आंशिक तौर पर राजाओं की अवज्ञाकारिता को यहूदा की बंधुआई का दोषी ठहराती है।

1 राजा 9:6-7 में राजा सुलैमान से कहे गए परमेश्वर के वचनों को सुनें :

> परंतु यदि तुम लोग या तुम्हारे वंश के लोग मेरे पीछे चलना छोड़ दें; और मेरी उन आज्ञाओं और विधियों को जो मैं ने तुम को दी है, न मानें, और जाकर पराये देवताओं की उपासना करें और उन्हें दण्डवत् करने लगें, तो मैं इस्राएल को इस देश में से जो मैं ने उनको दिया है, काट डालूँगा और इस भवन को जो मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है, अपनी दृष्टि से उतार दूँगा; और सब देशों के लोगों में इस्राएल की उपमा दी जायेगी और उसका दृष्टान्त चलेगा (1 राजा 9:6-7)।

दुखद रूप से, इस्राएल और यहूदा के सारे राजा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं थे, और फलस्वरूप लोगों को अक्सर दुःख उठाना पड़ा। परंतु जब मंदिर की उपेक्षा की गई या लोग मूर्तिपूजा में गिर गए, तब भी विश्वासयोग्य राजा अक्सर राष्ट्र की आराधना को सुधारने और उसकी पुनर्स्थापना करने में सक्षम रहे। हम इसे 2 राजाओं 18:1-8 में हिजकिय्याह के साथ, और 2 राजाओं 22:1-23:25 में योशिय्याह के साथ देखते हैं। उनके सुधार के प्रयासों ने परमेश्वर के लोगों को प्रोत्साहित किया और उनमें विश्वासयोग्यता को उत्पन्न किया, और इस प्रकार परमेश्वर को उत्साहित किया कि वह उनके शासनकाल के दौरान राष्ट्र को आशीषित करे।

पुराने नियम में राजाओं की योग्यताओं और कार्यों को देखने के बाद, अब हम उन अपेक्षाओं को देखने के लिए तैयार हैं जिनकी रचना पुराने नियम ने इस्राएल में राजत्व के भविष्य के लिए की थी।

अपेक्षाएँ

पुराने नियम ने भविष्य के राजाओं के लिए बहुत सी अपेक्षाओं को स्थापित किया, और विशेषकर उस एक विशेष मसीहा-रूपी राजा के लिए जिसके विषय में यह भविष्यवाणी की गई थी वह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की स्थापना के लक्ष्य को पूरा करेगा। और निस्संदेह, नया नियम प्रकट करता है कि यह मसीहा-रूपी राजा यीशु था। अतः, हमें पुराने नियम के इन पूर्वानुमानों को थोड़ा और विस्तार के साथ देखना चाहिए।

हम इस्राएल में भविष्य के राजत्व की अपेक्षाओं को देखेंगे जिनकी रचना दो स्रोतों के द्वारा हुई : पहला, पुराने नियम में राजत्व का ऐतिहासिक विकास; और दूसरा, इस्राएल के भविष्य के राजा के विषय की गईं विशेष भविष्यद्वाणियाँ। आइए पहले राजत्व के ऐतिहासिक विकास के द्वारा की गई अपेक्षाओं को देखें।

ऐतिहासिक विकास

हम राजतंत्र से पूर्व सृष्टि के समय से लेकर इस्राएल में न्यायियों के समय तक परमेश्वर की योजना में मानवीय राजत्व द्वारा अदा की गई महत्वपूर्ण भूमिका पर ध्यान देने के द्वारा आरंभ करेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राजतंत्र से पूर्व। जब परमेश्वर ने संसार की रचना की, तो उसने आदम और हव्वा को अपनी सृष्टि पर उप-शासकों के रूप में अदन की वाटिका में रखा। परमेश्वर ने उत्पत्ति 1:26-27 में मनुष्यजाति की इस भूमिका को दर्शाया, जहाँ उसने आदम और हव्वा को अपने स्वरूप में रचने की योजना बनाई और रचा।

पुराने नियम के दिनों में, "परमेश्वर का स्वरूप," "परमेश्वर की समानता," और "परमेश्वर का पुत्र" जैसी शब्दावली का प्रयोग सामान्यतः राजाओं और सम्राटों को दर्शाने के लिए किया जाता था। ऐसी शब्दावली ने इस प्रकार की धारणा को व्यक्त किया कि राजा अपने ईश्वरों के पृथ्वी पर के प्रतिनिधि या सूबेदार हैं। राजा का कार्य यह निश्चित करना था कि ईश्वर की इच्छा इस पृथ्वी पर पूरी हो। इसलिए, जब बाइबल आदम और हव्वा को परमेश्वर के स्वरूप में दर्शाती है तो इसका एक अर्थ यह है कि परमेश्वर ने पूरी मनुष्यजाति को इस पृथ्वी पर उसके उप-शासकों के रूप में नियुक्त किया है। सबसे वृहत भाव में देखें तो, सभी मनुष्यों की रचना शासकों, और परमेश्वर के सेवक राजाओं के रूप में जीने के लिए की गई है जो यह सुनिश्चित करते हैं कि उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो। यह विचार कि शासकीय लोग ईश्वर के स्वरूप थे, हमें उत्पत्ति 1:28 की व्याख्या करने में सहायता करता है, जहाँ परमेश्वर ने हमारे पहले माता-पिता को यह आज्ञा दी थी :

> और परमेश्वर ने उनको आशीष दी : और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओ पर अधिकार रखो। (उत्पत्ति 1:28)

परमेश्वर संपूर्ण पृथ्वी को अपने राज्य में बदलना चाहता था। इसलिए, उसने अपने उप-शासकों, अर्थात् मनुष्यजाति को नियुक्त किया, जिन्हें परमेश्वर के और अधिक स्वरूपों से संसार को भरना था, और पूरी सृष्टि पर अधिकार या शासन करना था। इस आदेश को अक्सर सांस्कृतिक आदेश कहा जाता है क्योंकि यह हमें संसार में संस्कृतियों और सभ्यताओं की स्थापना करने के द्वारा परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने की आज्ञा देता है।

जब आदम और हव्वा पाप में गिर गए, तो वे और उनके वंशज अपनी मूल जिम्मेदारियों से इतने दूर भटक गए कि परमेश्वर ने नूह के जलप्रलय के द्वारा पापमय मनुष्यजाति को दंड दिया। परंतु फिर भी परमेश्वर ने इस संसार में मनुष्यजाति के शासकीय कार्य को निरस्त नहीं किया। जब नूह और उसका परिवार जहाज से बाहर निकाला गया, तो परमेश्वर ने सांस्कृतिक आदेश को फिर से अभिपुष्ट किया, और अपने सभी शासकीय स्वरूपों को पूरे संसार में परमेश्वर का सम्मान करने वाली सभ्यता को फैलाने की आज्ञा दी।

परंतु अब्राहम के दिनों में मनुष्यजाति का शासन एक महत्वपूर्ण तरीके से परिवर्तित हो गया। परमेश्वर ने अब्राहम को छुटकारा दिया और उसे अपने चुने हुए लोगों, अर्थात् इस्राएल का पिता ठहराया। यद्यपि, एक सामान्य अर्थ में सभी मनुष्य अभी भी परमेश्वर के उप-शासक थे, परंतु यहोवा ने अब्राहम और उसके वंशजों को पृथ्वी के सभी परिवारों के पहलौठे के रूप में चुन लिया। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ उत्पत्ति 15 और 17 में एक विशेष वाचा बाँधी, जिसने यह दर्शाया कि इस्राएल के पास परमेश्वर के लिए एक पवित्र राष्ट्र का निर्माण करने का विशेष, शासकीय विशेषाधिकार था। और इसी राष्ट्र को अन्य सभी राष्ट्रों में परमेश्वर की इच्छा को फैलाने के लिए आरंभिक बिंदु बनना था।

आगे के इतिहास में, परमेश्वर ने इस्राएल की अगुवाई के लिए पहले मूसा को और फिर यहोशू को भेजने के द्वारा अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करना आरंभ किया। उनके शासन में, परमेश्वर ने मिस्र की गुलामी से अपने लोगों को छुड़ाया, और कनान, अर्थात् प्रतिज्ञा की उस भूमि पर विजय प्राप्त करने का सामर्थ्य दिया, जहाँ उन्हें छुटकारा पाए हुए लोगों, परमेश्वर के पवित्र स्वरूपों का एक बड़ा राष्ट्र बनना था।

दुखद रूप से, इस्राएल कनान पर अपनी विजय को पूरा करने में असफल रहा। अतः यहोशू की मृत्यु के बाद राष्ट्रीय एकता छिन्न-बिन्न हो गई और कई स्थानीय न्यायियों और लेवियों ने एक बहुत ही मुश्किल भरे समय में इस्राएल की अगुवाई की। यद्यपि परमेश्वर ने इन दिनों में इस्राएल को आशीषित किया, परंतु न्यायियों और लेवियों की अगुवाई इतनी पर्याप्त नहीं थी कि इस्राएल को परमेश्वर के शासकीय स्वरूपों के अगुवे राष्ट्र बनने में सफलता प्रदान करे। न्यायियों की पुस्तक के लेखक ने इस बात को अपनी पूरी पुस्तक में स्पष्ट किया है। न्यायियों 21:25 में उस पुस्तक के अंतिम वाक्य को सुनिए :

> उन दिनों में इस्राएल में कोई राजा न था, जिसको जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था (न्यायियों 21:25)।

ऐसी ही टिप्पणियाँ न्यायियों 17:6, 18:1, और 19:1 में भी दिखाई देती हैं। इन दोहरावों ने इस बात पर बल दिया कि इस्राएल परमेश्वर के चुने हुए राष्ट्र के रूप में केवल एक ऐसे धर्मी राजा के शासन में ही आगे की ओर बढ़ सकता है जो परमेश्वर के विशेष उप-शासक के रूप में सेवा करता हो।

> न्यायियों की पुस्तक आने वाले राजा के विषय में मूलाधार के रूप में प्रतीत होती है। न्यायियों की पुस्तक में एक चक्र है जिसमें कि एक न्यायी को खड़ा किया जाता है, वह कुछ समय के लिए ठीक है, फिर लोग पाप में गिरते हैं, वे परमेश्वर के सामने पुकारते हैं और परमेश्वर एक और न्यायी को खड़ा करता है। और लेखक स्पष्ट तौर पर यह कहना चाहता है कि वहाँ किसी और अधिक स्थाई, अधिक ज्यादा सुरक्षित बात की आवश्यकता है, और वह एक शासक और अगुवे की लालसा करता है जो परमेश्वर के मन के अनुसार हो। और निस्संदेह वह विशेषता ख़ास तौर से दाऊद पर लागू की जाती है, जो परमेश्वर के मन के अनुसार एक राजा था, और जिसे राजत्व के एक नमूने के रूप में देखा जाता है, न केवल तब इस्राएल के लोगों के लिए, बल्कि वास्तव में इस रूप में कि कैसे परमेश्वर अपने शासन को अपने लोगों पर क्रियान्वित करता है। अतः न्यायियों की पुस्तक तब एक तरह से एक राजा की आवश्यकता के लिए उत्साहपूर्ण है, अर्थात् एक ऐसे राजा के लिए जो परमेश्वर के अधीन शासन करे, जो हमें दिखाए कि कैसे परमेश्वर अपने लोगों पर उस समय और सचमुच आज भी राज्य करता है।
>
> — डॉ. साइमन विबर्ट

> न्यायियों की पुस्तक को परमेश्वर की पूरी योजना, अर्थात् उत्पत्ति से लेकर यीशु मसीह के आगमन तक की कड़ी के अंतर्गत रखना महत्वपूर्ण है। न्यायियों की पुस्तक पूर्व में दिए गए प्रकाशन की ओर देखती है, अर्थात् राजकीय व्यक्ति के रूप में आदम की ओर, अब्राहम के वंश से आने वाले राजाओं की कल्पना करते हुए अब्राहम की वाचा में अब्राहम की ओर, व्यवस्थाविवरण 17 में पुरानी वाचा को प्रदान करते हुए मूसा की ओर, जहाँ आने वाले राजा की कल्पना की गई है। फिर भी, परमेश्वर की योजना में यह वह समय नहीं था जब वास्तविक राजा आ रहे थे। कुछ अर्थों में न्यायियों की पुस्तक अगुवों की आवश्यकता, अर्थात् शासन की आवश्यकता को दिखा रही थी। मूसा के बाद यहोशू कार्य को आगे बढ़ाता है; यहोशू के बाद न्यायी कार्य को आगे बढ़ाते हैं। फिर भी, वहाँ ऐसा कोई राजा नहीं है जिसकी कल्पना परमेश्वर कर रहा है। अभी उसकी कोई पूर्णता नहीं है। न्यायी अपनी अगुवाई पर आधारित हैं, यदि वे भले हैं तो राष्ट्र सामान्यतः बहुत बुरा नहीं

> है। यदि वे बुरे हैं तो राष्ट्र भी बुरा है, और वहाँ कोई राजा नहीं है। जब राजा आते हैं, तो न्यायियों की पुस्तक हमें बताती है कि परिस्थितियाँ पहले से अच्छी होंगी। वे बातें पूरी होंगी जो पुराने नियम ने हमें दी हैं। और तब, निस्संदेह हम न्यायियों से आगे बढ़कर शाऊल और दाऊद की ओर आते हैं, जिन्हें एक दूसरे के विरूद्ध रखा गया प्रतीत होता है - लोगों का राजा, परमेश्वर का राजा - जो फिर से हमें दाऊद की महान वाचा, अर्थात् दाऊद के महानतम पुत्र की प्रतिज्ञाओं की ओर ले चलता है। यह सब परमेश्वर की योजना का भाग है, जो हमें प्रभु यीशु मसीह के आगमन के लिए तैयार करता है, और हमें यह दिखाता है कि अन्य राजाओं की तुलना में सच्चा राजा कैसा होगा, तथा हम जैसे मूल रूप से बनाए गए थे उसमें फिर से पुनर्स्थापित होने की आवश्यकता को दिखाता है। और यह सब परमेश्वर की योजना का भाग है जो हमारी अगुवाई यीशु मसीह की ओर कर रहा है।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

अब जबकि हमने इस्राएल के राजतंत्र से पूर्व के दिनों में मानवीय राजत्व के उद्गमों को देख लिया है, इसलिए आइए हम इस्राएल के राजतंत्र के दौरान हुए ऐतिहासिक विकास की ओर मुड़ें।

राजतंत्र। 1 शमूएल 8:5-20 के अनुसार न्यायियों के समय के अंत में इस्राएल राष्ट्र अपने चारों ओर के राष्ट्रों की उस स्थिरता और व्यवस्था से जलने लगा जो उनके राजाओं ने उन्हें प्रदान की थी। परंतु उन्होंने परमेश्वर की प्रतीक्षा करने से इनकार कर दिया कि वह अपने समय में एक राजा को खड़ा करे। इसकी अपेक्षा, उन्होंने माँग की कि वह उसी समय उन्हें एक राजा दे। इसके प्रत्युत्तर में, परमेश्वर ने शाऊल को इस्राएल के पहले आधिकारिक राजा के रूप में नियुक्त किया।

अब यह समझना महत्वपूर्ण है कि एक मानवीय राजा को नियुक्त करने की इस्राएल की इच्छा अपने आप में पापपूर्ण नहीं थी। परमेश्वर ने पहले से ही कई बार यह प्रकट कर दिया था कि उसकी योजना इस्राएल के लिए यह थी कि वह एक मानवीय राजा के साथ एक सामर्थी राष्ट्र बने। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 17:6 में परमेश्वर ने अब्राहम से यह प्रतिज्ञा की कि उसके वंशजों में से राजा आएँगे। उत्पत्ति 49:8-10 में याकूब ने यहूदा के लिए यह घोषणा करते हुए आशीष दी कि यहूदा का एक वंशज इस्राएल पर राज्य करेगा। और जैसा कि हमने इस अध्याय के आरंभ में देखा है, व्यवस्थाविवरण 17:14-19 में मूसा ने भी इस्राएल के राजाओं के लिए नियमों का विवरण दिया है। इससे बढ़कर, 1 शमूएल 2:10 में इस्राएल द्वारा परमेश्वर पर उन्हें एक राजा देने का दबाव डालने से ठीक पहले, धर्मी हन्ना ने एक भविष्यद्वाणी से भरी हुई प्रार्थना की कि परमेश्वर अंततः अपने लोगों पर एक धर्मी राजा को स्थापित करेगा।

परंतु इस्राएल में राजतंत्र के लिए परमेश्वर की भली योजनाओं के बावजूद भी, इस्राएल राष्ट्र ने परमेश्वर पर भरोसा करने और उसके समय की प्रतीक्षा करने से इनकार करने के द्वारा पाप किया। और उनके राजा के रूप में परमेश्वर द्वारा शाऊल की नियुक्ति का उद्देश्य आंशिक रूप से उन्हें इस पाप के लिए दंडित करना था। और जहाँ शाऊल ने कुछ रूपों में इस्राएल को आगे बढ़ाया, वहीं परमेश्वर के विरुद्ध उसके अपने विद्रोह ने यहोवा को उसे और उसके परिवार को उखाड़ फेंकने के लिए प्रेरित किया।

परंतु शाऊल की असफलता के बाद, परमेश्वर ने दाऊद को उनके राजा के रूप में खड़ा करने के द्वारा इस्राएल को बड़ी उदारता से ऐसा राजा दिया जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। शेष सारी पतित मनुष्यजाति के समान दाऊद भी एक पापी मनुष्य था। परंतु साथ ही वह परमेश्वर के मन के अनुसार एक व्यक्ति था। और परमेश्वर ने उसे सामर्थ्य दिया कि वह राष्ट्र को एकता में बाँधे, अपने शत्रुओं को हराए, और इस्राएल में सुरक्षा और संपन्नता को लाए। यही नहीं, परमेश्वर ने दाऊद के साथ एक वाचा बाँधी ताकि

उसके वंशज सदैव इस्राएल पर अपने स्थाई राजकीय शासन के रूप में राज्य करें। हम इस वाचा के विषय में 2 शमूएल 7; 1 इतिहास 17; और भजन 89, 132 जैसे स्थानों में पढ़ते हैं।

जब दाऊद की मृत्यु हुई, तो उसका पुत्र सुलैमान उसके स्थान पर राजा बना। कई रूपों में, सुलैमान का राज्य इस्राएल के राजाओं के इतिहास में चरम बिंदु पर था। उसने इस्राएल की सीमाओं का विस्तार किया, और इसकी धन संपत्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाया। दुखद रूप से, उसने भी अपनी विदेशी पत्नियों के देवताओं की पूजा करने के द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था की घोर अवहेलना की। फलस्वरूप, यहोवा ने सुलैमान के पुत्र रहूबियाम के दिनों में राज्य को दो भागों में विभाजित कर दिया। और उसके बाद आने वाली पीढियाँ परमेश्वर के प्रति और भी अधिक अविश्वासयोग्य रहीं, इसलिए अंततः इस्राएल और यहूदा को परमेश्वर का दंड सहना पड़ा और उन्हें अपनी भूमि से निर्वासन में जाना पड़ा। इस्राएल के उत्तरी राज्य पर 723 या 722 ई. पू. में अश्शूरियों ने विजय प्राप्त की, और 587 या 586 ई. पू. में यहूदा के दक्षिण राज्य पर बाबुल या बेबीलोन ने विजय प्राप्त की। अंतिम वैधानिक राजा दाऊदवंशी यहोयाकीम था, जिसे यकोन्याह के नाम से भी जाना जाता है जिसको राजगद्दी से उतार दिया गया था और 597 ई. पू. में बंधुआई में ले जाया गया था।

राजतंत्र के समय के अंत में परमेश्वर ने मानवीय शासन के बारे में बहुत कुछ प्रकट कर दिया था। विस्तृत भाव में, सभी मनुष्य पृथ्वी पर परमेश्वर के उप-शासक हैं। संक्षिप्त भाव में, इस्राएल के राष्ट्र के पास मनुष्यजाति के ऐसे पवित्र परिवार के रूप में विशेष शासकीय अधिकार था जिसे अन्य राष्ट्रों के लिए एक उदाहरण बनना था। और सबसे संक्षिप्त भाव में, दाऊद के राजकीय वंशजों ने परमेश्वर के मुख्य उप-शासक के कार्यभार को प्राप्त किया। परमेश्वर ने दाऊद के पुत्रों को अभिषिक्त किया कि वे इस्राएलियों और शेष संसार के लोगों की अगुवाई सर्वोच्च राजा, अर्थात् स्वयं परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवा करने में करें।

अब जबकि हमने इस्राएल में राजतंत्र से पहले और इसके दौरान राजा के कार्यभार के ऐतिहासिक विकास को देख लिया है, इसलिए आइए हम राजतंत्र के बाद की अवधि के बारे में अध्ययन करें, जब इस्राएल और यहूदा निर्वासन में थे और वहाँ कोई भी दाऊदवंशी राजा नहीं था।

निर्वासन। यद्यपि बाबुल के लोगों ने यरूशलेम को नाश कर दिया था और दाऊद के उत्तराधिकारी को सिंहासन से हटा दिया था, परंतु उसके बाद फारसी राजा कुस्रू ने बाबुल पर विजय प्राप्त की और आदेश दिया कि इस्राएली अपनी प्रतिज्ञा की भूमि पर लौट सकते हैं। हम इस घटना को 2 इतिहास 36 और एज्रा 1 में देखते हैं।

कुस्रू के आदेश के बाद के वर्षों को अक्सर पुनर्स्थापना की अवधि कहा जाता है। वापस लौटे हुए लोगों ने परमेश्वर की वेदी को पुन: पवित्र किया, एक नए मंदिर का निर्माण किया, और यरूशलेम की शहरपनाह को फिर से बनाया। पहले से ही, हाग्गै 2:21-23 में भविष्यद्वक्ता हाग्गै ने इन बचे हुए लोगों को यह भी बताया था कि यदि विश्वासयोग्य रहें, तो हो सकता है कि परमेश्वर उनके राज्यपाल यरूब्बाबेल को, जो कि दाऊद के वंश से था, दाऊद के सिंहासन पर नियुक्त कर सकता है। परंतु लोग परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहे। इसलिए, पुराना नियम प्रतिज्ञा की भूमि में केवल कुछ बचे हुए इस्राएलियों के रहने के साथ समाप्त होता है, जिनकी महिमा की आशाएँ अब भविष्य में स्थगित हो गई थीं।

पुराने और नए नियमों के बीच के समय में, इस्राएल के पाप ने इस्राएल में राजत्व की पुनर्स्थापना में विलंब को निरंतर जारी रखा। यूनानी साम्राज्य ने फारसी साम्राज्य को पराजित कर दिया और फिलीस्तीन में रह रहे इस्राएलियों को अपने अधीन कर लिया। और बाद में, रोमी साम्राज्य ने यूनानियों को पराजित किया और प्रतिज्ञा की भूमि को अपने अधीन कर लिया। इस सारे समय के दौरान, इस्राएल पर परमेश्वर द्वारा अधिष्ठापित कोई राजा नहीं था।

अश्शूरियों, बाबुल, मादियों और फारसियों, यूनानियों और रोमियों के अधीन इस्राएल पर हुए अत्याचार की दयनीय अवस्था ने एक बात को स्पष्ट तौर से दिखाया : दाऊद के धर्मी पुत्र का शासन

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भविष्य के लिए महत्वपूर्ण होगा। परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में संसार में अपनी भूमिका को पूरा करने के लिए इस्राएल को एक दाऊदवंशी राजा की आवश्यकता थी। इसलिए परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों ने निरंतर ऐसे समय की अपेक्षा करना जारी रखा जब परमेश्वर उन्हें उनके शोषकों से बचाने के लिए और सारे संसार पर परमेश्वर की इच्छा को फैलाने के लिए धर्मी दाऊदवंशी राजा को भेजने के द्वारा दाऊद के साथ अपनी वाचा को सम्मान देगा।

अब जबकि हमने राजा के कार्यभार के ऐतिहासिक विकास को देख लिया है, इसलिए आइए हम राजत्व के भविष्य की उन अपेक्षाओं पर ध्यान दें जो पुराने नियम की विशेष भविष्यद्वाणियों से उठी हैं।

विशेष भविष्यद्वाणियाँ

पुराने नियम में इस्राएल में राजत्व के भविष्य के विषय में इतनी अधिक भविष्यद्वाणियाँ पाई जाती हैं कि उन सबका उल्लेख करना हमारे लिए असंभव है। इसलिए इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम केवल चार महत्वपूर्ण विषयों का उल्लेख करेंगे। पहला, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने यह भविष्यद्वाणी की कि परमेश्वर दाऊदवंशी राजवंश को पुनर्स्थापित करेगा।

> पुराना नियम विशेषकर मसीहा के विषय में सबसे पहले इस बात पर बल देता है कि वह दाऊद का पुत्र है। निस्संदेह दाऊद इस्राएल का ऐसा महान राजा था जिसने बहुत ही महत्वपूर्ण रूप में यहोवा पर भरोसा रखा, बड़े-बड़े युद्धों को जीता, अनेक रूपों में यहोवा की आज्ञा का पालन किया। निस्संदेह वह बड़े-बड़े पापों में भी गिरा, परंतु दाऊद ऐसा उदाहरण बन गया कि मसीह कैसा होगा। वह ऐसा शासक होगा जो राष्ट्र में शांति लेकर आएगा। और इस तरह से हम पुराने नियम के अंतिम भाग में दाऊद की मृत्यु के बाद एक ऐसी अपेक्षा को देखते हैं कि दाऊद का एक पुत्र आएगा और यह विचार विशेषकर इस बात के अनुरूप है कि वहाँ शांति और धार्मिकता और आनंद होगा।
>
> — डॉ. थॉमस शरेइनर

> परंतु, पुराने नियम में वह व्यक्ति जिसे मसीह के रूप में जाना गया वह एक राजा था, वह दाऊद के वंश का राजा था। दाऊद को परमेश्वर के द्वारा एक वाचा दी गई थी और उस वाचा में उसके साथ प्रतिज्ञा की गई थी कि एक दिन परमेश्वर उसके वंश से एक ऐसा राजा खड़ा करेगा जिसके पास परमेश्वर के साथ उसके पुत्र होने का विशेष और अद्वितीय संबंध होगा। जो दाऊद के सिंहासन पर सदैव के लिए राज्य करेगा, जो धार्मिकता और न्याय को स्थापित करेगा। अतः वास्तव में, जब हम पुराने नियम के मसीहा की ओर संकेत करते हैं, तो हम एक राजा, अर्थात् परम राजा को दर्शाते हैं, एक ऐसा राजा होगा जो परमेश्वर के उद्धार और छुटकारे को लाएगा।
>
> — डॉ. मार्क स्ट्रॉस

भविष्यद्वक्ता ने कहा कि इस्राएल में दाऊदवंशी राजत्व को पुनर्स्थापित करने के लिए परमेश्वर अंततः दाऊद के एक धर्मी पुत्र को भेजेगा। हम इसे भजन 89, यशायाह 9:7 और 16:5, यिर्मयाह 23:5 और 33:25-26 और यहेजकेल 34:23-24 सहित कई स्थानों पर पाते हैं। केवल एक उदाहरण के तौर पर, सुनिए आमोस 9:11 में परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता आमोस के द्वारा क्या कहा :

> उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोपड़ी को खड़ा करूँगा . . . और उसके खण्डहरों को फिर बनाऊँगा और जैसा वह प्राचीनकाल से था, उसको वैसा ही बना दूँगा (आमोस 9:11)।

दूसरा, भविष्यद्वक्ताओं ने यह भविष्यद्वाणी की कि दाऊद का यह भविष्य में आने वाला पुत्र लोगों को उसके शत्रुओं पर स्वतंत्रता और विजय प्रदान करेगा। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने निरंतर एक ऐसे समय के बारे में बात की जब परमेश्वर नाटकीय ढंग से अपने विश्वासयोग्य लोगों के बदले अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए इतिहास में हस्तक्षेप करेगा। परमेश्वर ने उन सबको दंड देने की प्रतिज्ञा की जिन्होंने उसके मार्गों का विरोध किया, जिनमें इस्राएल के अविश्वासयोग्य लोग भी शामिल थे। और भविष्यद्वक्ताओं ने बार-बार इन विजयों को दाऊद के सिंहासन के भविष्य के उत्तराधिकारी के साथ जोड़ा, जो परमेश्वर के एक महान शासक के तौर पर कार्य करेगा। इन अपेक्षाओं की भविष्यद्वाणी भजन 132:17-18, यशायाह 9:4-7, यिर्मयाह 30:5-17, यहेजकेल 34:2, और जकर्याह 12:1-10 जैसे स्थानों में की गई हैं। उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 30:8-9 की भविष्यद्वाणी को सुनिए :

> सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उस दिन मैं उसका रखा हुआ जूआ तुम्हारी गर्दन पर से तोड़ दूँगा, और तुम्हारे बन्धनों को टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा; और परदेशी फिर उनसे अपनी सेवा न कराने पाएँगे। परंतु वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद की सेवा करेंगे जिसको मैं उन पर राज्य करने के लिये ठहराऊँगा। (यिर्मयाह 30:8-9)

तीसरा, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की कि दाऊद का भविष्य में आने वाला पुत्र एक अनंतकालीन के राज्य को स्थापित करेगा। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने निरंतर यह शिक्षा दी कि जब दाऊद का महान पुत्र इस्राएल पर राज्य करेगा, तो वे हमेशा-हमेशा के लिए परमेश्वर की आशीषों का आनंद लेंगे। दाऊदवंशी राजा का राज्य इस पृथ्वी को स्वर्ग के समान बना देगा, और उसके लोग सदैव शांति और संपन्नता में रहेंगे। यह अपेक्षा यशायाह 55:3-13, और यहेजकेल 37:24-25 जैसे अनुच्छेदों में प्रकट होती है। उदाहरण के लिए, सुनिए यशायाह 9:7 में यशायाह ने दाऊद के भविष्य में आने वाले पुत्र के बारे में क्या कहा है:

> उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शांति का अंत न होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा। (यशायाह 9:7)

चौथा, भविष्यद्वक्ताओं ने यह भी सिखाया कि दाऊद का भविष्य में आने वाला यह पुत्र एक विश्वव्यापी राज्य की स्थापना करेगा। भविष्य का दाऊदवंशी राज्य न केवल समय की सीमा में, परंतु भौगोलिक रूप से भी असीमित होगा। वह पूरी पृथ्वी पर फ़ैल जाएगा। जिन्होंने अपने पापों से पश्चाताप किया है, वे सब इसकी आशीषों का आनंद लेंगे, फिर चाहे वे किसी भी राष्ट्र या जाति के लोग क्यों न हों। हम इसके उदाहरणों को भजन 2, 68, 72, 110, और 122 में पाते हैं। सुनिए किस प्रकार दानिय्येल 7:13-14 भविष्य के इस राजा और उसके राज्य के इस पहलू का वर्णन किस प्रकार करता है :

> मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था . . . तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश देश और जाति जाति के लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके अधीन हों। (दानिय्येल 7:13-14)

> मसीहा की भूमिका को समझने के लिए पुराने नियम का मुख्य अनुच्छेद भजन 2 है, जो इसकी एक स्पष्ट भविष्यद्वाणी है कि परमेश्वर ने एक विशेष राजा को नियुक्त किया है, जिसे उसने अपने पवित्र पर्वत सिय्योन पर नियुक्त किया है। और जब आप इसे सावधानी से पढ़ते हैं तो आप इस राजा के विषय में यह पाते हैं कि यह राजा जिसे परमेश्वर नियुक्त करने जा रहा है, वह ऐसा राजा होगा जो राष्ट्रों पर शासक होगा। राष्ट्र उसकी आज्ञा का पालन करेंगे। और वह एक ऐसा अधिकारिक व्यक्ति होगा, कि पृथ्वी के सभी राष्ट्र और सभी शासकों को उसके अधीन होकर उसकी आराधना करनी होगी, भजन 2 के वाक्यांश "पुत्र को चूमो" का यही अर्थ है। यह यही विचार है कि वह केवल इस्राएल का ही मसीहा नहीं है, यद्यपि वह है, परंतु क्योंकि वह इस्राएल का मसीहा है, इसलिए वह सारे संसार का भी प्रभु है, वह संपूर्ण संसार का न्यायसंगत प्रभु है। इसलिए समझने के लिए एक मुख्य बात यह है कि मसीह एक मानवीय व्यक्ति है, वास्तव में, यह पहले से ही समझ लिया गया था कि उसे एक ऐसा मानवीय व्यक्ति होना था जो आने वाला था और इस संसार का शासक होने वाला था।
>
> — डॉ. पीटर वॉकर

पुराना नियम राजत्व के भविष्य के लिए बड़ी आशाओं के साथ समाप्त हुआ। परमेश्वर दाऊद के एक विशेष पुत्र, अर्थात् एक सर्वोच्च उप-शासक को भेजेगा। वह परमेश्वर के लोगों के सारे शत्रुओं को पराजित करेगा। और वह उन सबके लिए पृथ्वी पर एक अनंतकालीन राज्य को स्थापित करेगा जो उसके शासन के प्रति समर्पित होगा। यह राज्य परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के मूल उद्देश्य को पूरा करेगा; यह इस्राएल के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करेगा; और यह दाऊद के सिंहासन की स्थापना के लिए परमेश्वर के मूल उद्देश्य को पूरा करेगा। दाऊद का धर्मी पुत्र पूरे संसार को उसके राज्य में बदल देगा, और इसे सारी बुराई से शुद्ध कर देगा, और हर समय के लिए उसके सब लोगों के लिए शांति और संपन्नता को स्थापित करेगा।

राजा के कार्यभार के संदर्भ में पुराने नियम की पृष्ठभूमि की खोज कर लेने के बाद अब हम हमारे अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : यीशु में राजा के कार्यभार की पूर्णता।

यीशु में पूर्णता

नया नियम स्पष्ट रूप से सिखाता है कि यीशु ही वह दाऊदवंशी राजा है जिसकी प्रतिज्ञा पुराने नियम में की गई थी। उदाहरण के लिए, ज्योतिषियों ने उसका वर्णन मत्ती 2:2 में यहूदियों के राजा के रूप में किया। यीशु के शिष्यों ने मरकुस 8:27-29 जैसे स्थानों में उसे मसीहा या मसीह (ख्रिस्त) जैसे राजकीय शीर्षकों के साथ संबोधित किया। यूहन्ना 1:49 में उसे इस्राएल का राजा कहा गया। और सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उसकी मृत्यु से ठीक पहले, यीशु ने स्वयं यह दावा किया कि वह पुराने नियम का प्रतिज्ञात मसीही राजा था। मत्ती 27:11 में पुन्तियुस पिलातुस के साथ उसके वार्तालाप को सुनिए :

> हाकिम ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?" यीशु ने उससे कहा, "तू आप ही कह रहा है।" (मत्ती 27:11)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम मरकुस 15:2, लूका 23:1-3 और यूहन्ना 18:33-37 में ऐसे ही विवरणों को पाते हैं। यद्यपि यीशु अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान इस्राएल के सिंहासन पर विराजमान नहीं हुआ, फिर भी नया नियम स्पष्ट रूप से सिखाता है कि वह वास्तव में प्रतिज्ञात दाऊदवंशी राजा है। और वह दाऊद के सिंहासन के विषय में पुराने नियम की प्रत्येक अपेक्षा को पूरा करने के लिए भविष्य में वापस आएगा।

हम यीशु के व्यक्तित्व में राजा के कार्यभार की परिपूर्णता की जाँच ऐसे रूपों करेंगे जो इस कार्यभार के प्रति पुराने नियम की पृष्ठभूमि के हमारे सर्वेक्षण के अनुकूल होगी। पहला, हम देखेंगे कि यीशु ने राजा के कार्यभार की योग्यताओं को पूरा किया। दूसरा, हम ध्यान देंगे कि यीशु ने राजाओं के कार्यों का नमूना प्रदान किया। और तीसरा, हम उन तरीकों की खोज करेंगे जिनमें यीशु ने उन अपेक्षाओं को पूरा किया जिनकी रचना पुराने नियम ने राजकीय सेवकाई के भविष्य के लिए की थी। आइए हम यीशु की राजकीय योग्यताओं से आरंभ करें।

योग्यताएँ

इस अध्याय में पहले हमने यह देखा था कि मूसा की व्यवस्था ने राजाओं के लिए चार योग्यताओं को दर्शाया था। पहली, राजा परमेश्वर के द्वारा चुना हुआ होना जरुरी था। दूसरी, उसे एक इस्राएली होना जरुरी था। तीसरी, उसे सफलता और सुरक्षा के लिए परमेश्वर पर निर्भर होना जरुरी था। और चौथी, उसे अपने शासन और व्यक्तिगत जीवन में वाचा के प्रति विश्वासयोग्यता को बनाए रखना जरुरी था। और इन योग्यताओं से बढ़कर, दाऊद के साथ बाँधी गई वाचा ने दर्शाया कि राजा को दाऊद का पुत्र होना जरुरी था। हमारे अध्याय में इस स्थान पर, आइए हम यह देखें कि कैसे यीशु ने इनमें से प्रत्येक योग्यता को पूरा किया। हम परमेश्वर के द्वारा चुने जाने की योग्यता से आरंभ करेंगे।

परमेश्वर द्वारा चुना हुआ

जैसा कि हमने पहले देख चुके हैं, परमेश्वर सारी सृष्टि के ऊपर महान सम्राट या सुजेरियन है। और इस्राएल का राजा परमेश्वर के विशेष, पवित्र इस्राएल पर सेवक राजा या वासल राजा था। और क्योंकि केवल परमेश्वर अपने अधिकार को बाँट सकता है, इसलिए उसे स्वयं ऐसे वैध राजाओं को चुनना था जो उसके राष्ट्र पर परमेश्वर के अधिकार के एक भाग को प्राप्त करें और उसका प्रयोग करें।

यीशु ने इस योग्यता को पूरा किया क्योंकि परमेश्वर ने उसे चुना और इस्राएल पर राजा होने के लिए ठहराया। हम इसे मत्ती 1:1-17 में यीशु की वंशावली और यीशु के जन्म के विषय में जिब्राईल स्वर्गदूत द्वारा मरियम से की गई घोषणा में देखते हैं। लूका 1:31-33 में जिब्राईल द्वारा मरियम से कहे गए शब्दों को सुनिए :

> तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अंत न होगा। (लूका 1:31-33)

परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया कि उसने यीशु को अपने लोगों पर राजा होने के लिए चुना था।

राजा के लिए दूसरी योग्यता यह थी कि उसे एक इस्राएली होना जरुरी था।

इस्राएली

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यीशु ने एक इस्राएली होने की योग्यता को पूरा किया क्योंकि वह एक इस्राएली परिवार में उत्पन्न हुआ था। कुँवारी मरियम के गर्भ में उसके चमत्कारिक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

देहधारण ने उसके जन्म को असामान्य बना दिया। परंतु वह फिर भी यूसुफ और मरियम की वैध संतान था, और इस्राएल के वाचाई समाज का पूर्ण सदस्य था। मत्ती 1 और लूका 3 में दी गई यीशु की वंशावलियों के द्वारा इसकी पुष्टि होती है, और साथ ही रोमियों 9:5 जैसे अनुच्छेदों के द्वारा भी जो यीशु के पास सच्चे इस्राएली पूर्वज होने के बारे में बात करते हैं।

पुराने नियम में तीसरी योग्यता यह थी कि राजा को शांति और संपन्नता को स्थापित करने के लिए मानवीय रणनीतियों की अपेक्षा परमेश्वर पर निर्भर रहना जरुरी था।

परमेश्वर पर निर्भर होना

यीशु ने इस योग्यता को पूरा किया क्योंकि वह अपने लोगों के लिए सुरक्षा और संपन्नता को स्थापित करने हेतु पूरी तरह से परमेश्वर के सामर्थ्य पर निर्भर रहा। उसने न तो हेरोदेस या फिर पिलातुस के साथ, या न ही किसी अन्य मानवीय प्रशासन के साथ कोई समझौता किया। इसकी अपेक्षा, वह अपने राज्य को स्थापित करने और उसे बनाए रखने के लिए परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य पर निर्भर रहा, जैसा कि हम यूहन्ना 13:3 और 19:10-11 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं।

राजा के लिए पुराने नियम की चौथी योग्यता जिसे यीशु ने पूरा किया यह थी कि उसने परमेश्वर की वाचाई व्यवस्था के साथ अपने संबंध के द्वारा परमेश्वर के प्रति वाचाई विश्वासयोग्यता को प्रकट किया।

वाचाई विश्वासयोग्यता

परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति यीशु की विश्वासयोग्यता कई तरह से दिखाई देती है, परंतु विशेष तौर पर यह व्यवस्था के मूल अर्थ और हर व्यवस्था द्वारा अपेक्षित सब बातों को पूरा करने के उसके समर्पण में दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, मत्ती 5-7 के पहाड़ी उपदेश में व्यवस्था के शिक्षकों द्वारा बताई गई मौखिक शिक्षाओं की विपरीतता में यीशु ने बार-बार व्यवस्था में लिखी बातों पर बल दिया। इसके अतिरिक्त, उसने विशेष तौर पर कहा कि वह व्यवस्था की प्रत्येक बात को पूरा करने के लिए आया था। सुनिए मत्ती 5:17-18 में उसने क्या कहा :

> यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ। लोप करने नहीं, परंतु पूरा करने आया हूँ। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिंदु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। (मत्ती 5:17-18)

प्रेरित पौलुस ने इसी विचार को रोमियों 8:3-4 में दर्शाया है, जहाँ उसने कहा कि यीशु ने वास्तव में केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि हमारे बदले में भी संपूर्ण व्यवस्था को पूरा किया था।

> बाइबल कहती है कि व्यवस्था हमारे लिए एक शिक्षक की तरह है जो मसीह की ओर संकेत करती है, जो हमें उसके पास ले आती है, हमें उसके लिए तैयार करती है। व्यवस्था दी गई है और यह परमेश्वर के चरित्र का प्रतिबिंब है। परंतु हम व्यवस्था का पालन करने में असफल हो जाते हैं। और इसलिए जब यीशु आता है तो वह हमें इसके इच्छित उद्देश्य को पूरा करते हुए सिद्ध मनुष्यत्व को दर्शाता है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्यता से परिपूर्ण परमेश्वर के साथ संबंध है। अतः यीशु आया, न केवल सच्चे मनुष्यत्व को उसके सही अर्थों में दिखाते हुए, बल्कि हमारे लिए उस व्यवस्था को पूरा करते हुए भी। यीशु वाचा के पालन और व्यवस्था का पालन करने के व्यवहार के प्रति अपनी निरंतर विश्वासयोग्यता में व्यवस्था को पूरा करता है। ताकि वह हमारी धार्मिकता बन जाए। बाइबल कहती है कि परमेश्वर धर्मी है और धर्मी बनाने वाला भी है। और

इसलिए वह व्यवस्था के साथ आता है और फिर वह अपने उस पुत्र के साथ आता है जो हमारे लिए व्यवस्था का पालन करता है। अतः वह धर्मी है और साथ ही वह है जो हमें मसीह में धर्मी ठहराता है।

— डॉ. ऐरिक थोनेस

इस बात पर बल देना महत्वपूर्ण है कि यीशु वाचा के प्रति विश्वासयोग्य है, जो हमारे ऊपर शासन करने के उसके अधिकार का आधार है। मेरे कहने का अर्थ है कि यह उन बहुत से विषयों को उठाना है जो वास्तव में आदम की ओर जाते हैं। हमारे मुखिया, संपूर्ण मनुष्यजाति के हमारे प्रतिनिधि होने के रूप में आदम को परमेश्वर के सब प्राणियों के समान आज्ञाकारी होना, और विश्वासयोग्य होना जरुरी है। हम मानवीय प्राणी हैं। हम वे लोग हैं जिन्हें अपने सृष्टिकर्ता का आज्ञाकरी बनना है, हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसकी सेवा करनी है, उसके प्रति आज्ञाकारी बनना है, और उससे प्रेम करना है। अपनी अवज्ञाकारिता में वह अपने साथ पाप, मृत्यु और दंड को ले आया। इसे बदलने का केवल एक तरीका यह है कि इसके समाधान के लिए हमें परमेश्वर की आवश्यकता है कि वह दूसरे मनुष्य, अर्थात् दूसरे आदम के द्वारा ऐसा करे। और इसलिए हम इस बात पर बहुत बल देते हैं कि परमेश्वर इन भिन्न-भिन्न भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं, और अंततः सुसमाचारों में पाए जाने वाले हमारे उस प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके विषय में आप सुसमाचारों में सोचते हैं, "परमेश्वर आदम के समान एक मनुष्य को प्रदान करेगा," जो परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने आया है। गलातियों 4 कहता है कि वह एक स्त्री से उत्पन्न हुआ, व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ कि पूरी व्यवस्था का पालन करे। इसकी आवश्यकता क्यों है? क्योंकि उसे उस सब कुछ को पलटना था जो आदम ने किया था। अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा - और हम इसके बारे में न केवल उसके जीवन के संदर्भ में सोचते हैं, परंतु उसका जीवन भी यहाँ महत्वपूर्ण है - कई बार हम इसे "आज्ञाकारिता का कार्य" भी कहते हैं, वह हमारे लिए व्यवस्था की सारी मांगों को पूरा करता है। अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा, सर्वोच्च रूप से फिलिप्पियों 2 में अपनी मृत्यु में, वह क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा। फिर वह उस कार्य के आधार पर, हमारे राजा के रूप में उस आज्ञाकारिता के आधार पर हमारा याजक होने के नाते पिता के दाहिने हाथ तक ऊँचा किया गया। ऐसा नहीं है कि वह पहले राजा और प्रभु नहीं था। पुत्र-परमेश्वर होने के रूप में वह पहले से ही राजा और प्रभु था। फिर भी, वह अपने कार्य के द्वारा देहधारी पुत्र-परमेश्वर है, और उसे अपने मनुष्यत्व के द्वारा आज्ञाकारी होना था, विश्वासयोग्य होना था, हमारे बदले में वह सब करना था, ताकि वह हमारे लिए उद्धार को अर्जित कर सके। वह पिता के प्रति संपूर्ण आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता के बिना ऐसा नहीं बन सकता था जिसे मसीहारूपी कार्य में, राजकीय कार्य में राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु होने के लिए दिया जा सके।

— डॉ. स्टीफन वैलम

पुराने नियम की वह पाँचवीं योग्यता जिसे यीशु ने पूरा किया यह थी कि वह दाऊद का पुत्र था।

दाऊद का पुत्र

दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा ने दाऊद के वंशजों को इस्राएल के स्थाई शासकों के रूप में स्थापित कर दिया। इसलिए, केवल दाऊद के उत्तराधिकारी ही इस्राएल के राजत्व का वैधानिक दावा कर सकते थे। दाऊद के घराने में यीशु की सदस्यता की शिक्षा पवित्रशास्त्र में कई स्थानों पर स्पष्टता से दी गई है। उनमें से कुछ का उल्लेख हम मत्ती 1:1-25, रोमियों 1:1-3 और प्रकाशितवाक्य 5:5 और 22:16 में देखते हैं।

अब जबकि हमने राजत्व के लिए यीशु की योग्यताओं को देख लिया है, इसलिए आइए हम उन तरीकों की ओर मुड़ें जिनमें यीशु ने राजकीय सेवा के कार्य को पूरा किया।

कार्य

इस अध्याय में पहले, हमने कहा था कि एक राजा का मौलिक कार्य संपूर्ण वासल राष्ट्र पर परमेश्वर की ओर से विश्वासयोग्यता से शासन करना है, विशेषकर परमेश्वर की व्यवस्था को संचालित करने के द्वारा। अब, सारे मसीही यह स्वीकार करते हैं कि यीशु ने अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान अपने कार्य को पूरा नहीं किया था। वास्तव में, यीशु अब भी स्वर्ग से कलीसिया में कार्य करना जारी रखता है। और वह अंततः अपने कार्य को पूरा करने के लिए वापस आएगा। उसने हमारे लिए जरुरत से अधिक कार्य कर दिया है कि हम इस बात का आनंद मनाएँ कि वही वास्तव में मसीह, अर्थात् ऐसा दाऊदवंशी राजा है जिसे परमेश्वर ने अपने राज्य को पुनर्स्थापित करने भेजा है।

हम उन्हीं श्रेणियों का प्रयोग करने के द्वारा राजा के रूप में यीशु के कार्य पर विचार करेंगे जिनको हमने इस कार्यभार के लिए पुराने नियम की पृष्ठभूमि में देखा था : न्याय को स्थापित करना, दया को लागू करना, और विश्वासयोग्यता को बढ़ावा देना। आइए पहले यीशु के न्याय को लागू करने को देखें।

न्याय

पुराने नियम के हमारे खंड के समान, हम न्याय की अवधारणा की जाँच अंतर्राष्ट्रीय न्याय के साथ आरंभ करते हुए दो क्षेत्रों में करेंगे। अपनी पृथ्वी पर की अधिकाँश सेवकाई के दौरान यीशु ने प्रत्यक्ष रूप से स्वयं को मानवीय प्रशासनों में शामिल नहीं किया। परंतु उसने शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के राज्य के विरुद्ध युद्ध छेड़ने और पाप के अत्याचार से लोगों को छुड़ाने के द्वारा न्याय को स्थापित किया। पवित्रशास्त्र लूका 11:14-20 और इफिसियों 2:2 जैसे स्थानों में इसका विवरण परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य के बीच आत्मिक युद्ध के रूप में करता है। अतः इसकी तुलना पुराने नियम के राजाओं के द्वारा युद्ध के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय न्याय को स्थापित करने के तरीकों के साथ करना तर्कसंगत है। जैसा कि यीशु ने मत्ती 12:28 में कहा है :

> यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है। (मत्ती 12:28)

इस पद में, यीशु ने संकेत किया कि दुष्टात्माओं को निकालने के जो कार्य उसने किए वे इस बात का प्रमाण हैं कि वह शैतान के राज्य के विरूद्ध लड़ाई में परमेश्वर के राज्य की अगुवाई कर रहा था।

पुराने नियम के राजाओं ने भी अन्य राष्ट्रों के साथ शांतिपूर्वक बातचीत में सम्मिलित होने के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय न्याय को क्रियान्वित किया। यद्यपि यीशु ने ऐसा अक्सर नहीं किया, फिर भी उसने पूर्व से आए हुए ज्योतिषियों से शांतिपूर्ण भेंटों को प्राप्त किया, जो मत्ती 2 में भेंट लेकर आए थे। ये ज्योतिष विदेशी राष्ट्रों के प्रतिनिधि थे, और उनका अभिप्राय उनके राष्ट्रों और इस्राएल के नए जन्मे राजा के बीच भले संबंधों को प्रोत्साहित करना था।

अंतर्राष्ट्रीय रूप से न्याय को क्रियान्वित करने के अतिरिक्त, यीशु ने इस्राएल राष्ट्र में भी परमेश्वर के न्याय को प्रोत्साहित किया। अन्य मानवीय राजाओं के समान यीशु सामान्यतः व्यक्तिगत विवादों में सम्मिलित नहीं हुआ। इसकी अपेक्षा, उसने उन्हें निचली अदालतों और न्यायकर्त्ताओं पर छोड़ दिया। परंतु उसने अपने लोगों के बीच लगातार न्याय को प्रोत्साहित किया। हम इसे मत्ती 5:25-26 और 12:15-21, और साथ ही लूका 18:7-8 जैसे स्थानों में देखते हैं। यीशु ने यह आश्वासन भी दिया कि वे भले और बुरे कार्यों पर भी नजर रखे हुए हैं ताकि वह उस समय इसका बदला दे सके जब वह दंड देने के लिए लौटेगा। उसकी राजकीय भूमिका का यह पहलू मत्ती 10:15, 11:22-24 और 12:36 जैसे अनुच्छेदों में प्रकट देता है, जहाँ उसने उन दोषों के बारे में बात की जिन्हें भविष्य में लगाया जाएगा। हम इसे यूहन्ना 5:22 में भी देखते हैं, जहाँ उसने दर्शाया कि वह वही है जो उस दोष को लगाएगा।

न्याय को स्थापित करने के अतिरिक्त, यीशु ने परमेश्वर की व्यवस्था को दया में लागू करने के द्वारा राजा के कार्य को पूरा किया।

दया

यीशु ने परमेश्वर द्वारा रचे गए प्राणियों के प्रति परमेश्वर के तरस का अनुसरण करने के द्वारा राजकीय दया को प्रदर्शित किया। जब लोगों ने पाप किया तो उसने सहनशीलता दिखाई। उसने उनकी कमजोरियों को समझा। उसने उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया। और उसने उन्हें उनके दुखों से राहत दी।

> जब हम राजत्व के हमारे सामान्य मानवीय इतिहास में एक राजा के बारे में सोचते हैं, तो हम सदैव किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचते हैं जिसके पास संपूर्ण अधिकार हो। वे कमरे में आते हैं लोग उनके सामने झुकना आरंभ करते हैं औरवे वह सब करना चाहते हैं जो राजा इच्छा करता है। परंतु यीशु का राजत्व, उसके जीवन की बाकी सब बातों के समान पूरे संसार को उलट-पुलट करता प्रतीत होता है। मैं यूहन्ना के पहले अध्याय के बारे में सोच रहा हूँ जहाँ वह सृष्टिकर्त्ता की विचारधारा का प्रयोग करता है, जिसने इस संसार को बनाया है। वह कहता है, "वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।" अब जो कोई यह कहता है कि मैं यीशु में विश्वास करता हूँ कि यीशु राजा है, और आप इस जैसे एक पद को वहाँ रख देते हैं, आप कहते हैं कि वह किस तरह का राजा वह है जो ऐसे संसार में आया जिसे उसने रचा था और स्वयं ही ठुकराया गया? अतः मैं सोचता हूँ कि दया दिखाना बस इसलिए नहीं है कि प्रभु हमारे लिए दुखी होता है, हाँ मैं निश्चित हूँ कि वह दुखी होता है, परंतु मैं सोचता हूँ कि यह इसलिए है क्योंकि वह परमेश्वर के आंतरिक जीवन के बारे में प्रकट करने का प्रयास कर रहा है। दया का संबंध त्रिएक जीवन से होना जरुरी है। और त्रिएकता, अनंतकाल के मेरे दृष्टिकोण से स्वयं राजा, अर्थात् पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा और सारे ब्रह्मांड का राजा, ऐसा परमेश्वर है जो त्रिएकत्व में इस आत्म-त्याग में एक दूसरे को समर्पित होता है अर्थात् पिता पुत्र को, पुत्र पिता को, आत्मा अन्य दोनों को। इसलिए जब यीशु पापियों पर दया को दिखाने के लिए आता है, तो वह आत्म-त्याग के प्रेम को व्यक्त कर रहा है, जो कि राजा का आत्म-प्रकाशन है। वह न्याय करेगा। वह अंततः उन पर दोष लगाएगा जो उससे प्रेम नहीं करते। परंतु जब वह इस पृथ्वी पर आता है, तो वह उन लोगों के पास आता है जिनसे दुर्व्यवहार किया गया है, जिन्हें हर तरह की गलत शक्तियों से और स्वयं शैतान ने ढक रखा है, और यह राजा आता है और वह कहता है, मैं तुमसे कोई माँग नहीं करूँगा। पहले, मैं

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आऊँगा और स्वयं को तुम्हें दे दूँगा। इसलिए उसकी दया के सारे कार्य इस संसार में स्वयं को त्याग देने वाले त्रिएक परमेश्वर के हृदय से निकलने वाले कार्य हैं। हमारा राजा इसी तरह से कार्य करता है। वह बिना किसी माँग के आता है। वह आत्म-त्याग के साथ आता है। और मैं सोचता हूँ कि दया उस आत्म-त्याग के प्रेम की एक अद्‌भुत अभिव्यक्ति है जो परमेश्वर के हृदय में और जहाँ कहीं यीशु गया वहाँ के लोगों को दिए गए देहधारण में आरंभ होती है। और निस्संदेह, इसकी पराकाष्ठा क्रूस पर हुई, जो हम पर उसकी दया है, कि एक राजा जो अपने जीवन का बलिदान करते हुए इसलिए मर जाएगा कि हम उद्धार प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की दया को पाएँ। इसलिए वही एकमात्र सच्चा दयाशील राजा है, और वह अपने राजत्व में वह दर्शाता है कि वह दया कैसी है।

— डॉ. बिल ऊरी

यीशु आता है और दया दिखाता है क्योंकि वह दयाशील है। मैं इस समय उसके धन्य वचनों के बारे में सोच रहा हूँ। इनमें से कुछ मुझे आकर्षित करते हैं। दूसरा धन्य वचन यह है : धन्य हैं वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पाएँगे। मेरे लिए इसका अर्थ यह है कि धन्य हैं वे जिनका हृदय उन बातों से टूटा है जिनसे परमेश्वर का हृदय टूटता है। अतः जब परमेश्वर मानवीय शरीर को धारण करता है और वह यहाँ आता है, तो वह इस संसार को देखता है और वह ऐसी बातें पाता है जो उसे दुखी कर देती हैं। और केवल रोने की अपेक्षा, वह कहता है, न केवल मैं आँसू बहाऊँगा, बल्कि मैं बड़ी दया से उन परिस्थितियों की ओर बढ़ूँगा। यह रूचिकर है कि बार्कले यह सुझाव देता है कि यूनानी नए नियम में शब्द दया का अर्थ त्वचा के भीतर पहुँचना है। अतः तरस के बारे में पूरी समझ यह है कि मैं उस जैसा कुछ महसूस कर सकता हूँ जो वे इस समय महसूस कर रहे हैं। और केवल यह कहने की अपेक्षा कि मुझे ख़ुशी है कि मैं वहाँ नहीं हूँ, मैं वहाँ उपस्थित होने जा रहा हूँ। मैं उनकी ओर बढ़ने जा रहा हूँ और मैं उनके लिए वह बनने जा रहा हूँ जो मैं मानता हूँ कि पिता परमेश्वर मुझसे चाहता है कि मैं उनके लिए इस समय और इस पल बनूँ।

— डॉ. मैट फ्रीडमैन

हम उन तरीकों को देखेंगे जिनमें यीशु ने दो क्षेत्रों में अपनी दया दिखाई, हम अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र से आरंभ करेंगे। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, राजा को उन राष्ट्रों और लोगों पर दया को लागू करना था जिन्होंने परमेश्वर के समक्ष समर्पण किया था। और यीशु ने ऐसा कई तरीकों से किया। पहला, उसने अन्यजाति के बहुत से लोगों को चमत्कारिक रूप से चंगाई दी जो इस्राएल राष्ट्र के दायरे से बाहर थे। उदाहरण के लिए, उसने मत्ती 15:28 में कनानी स्त्री की पुत्री को चंगा किया। उसने मत्ती 8:13 में रोमी सूबेदार के सेवक को चंगा किया। और उसने मरकुस 5:1-20 में दिकापुलिस के अन्यजाति क्षेत्र के एक व्यक्ति में से दुष्टात्माओं की एक बड़ी सेना को निकाला।

यही नहीं, यीशु ने अन्यजातियों के कई क्षेत्रों में सेवकाई की जिनमें सूर, सैदा और दिकापुलिस सम्मिलित हैं, जिससे उसका संदेश और कार्य अन्यजातियों के लिए प्रकाशन की ज्योति बन गया, जिसके विषय में शिमौन ने लूका 2:32 में भविष्यद्वाणी की थी कि ऐसा होगा।

परंतु उसकी अंतर्राष्ट्रीय दया से अधिक स्पष्ट उसकी राजकीय दया थी जिसे यीशु ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित किया। एक राजा होने के रूप में, यीशु का दायित्व यह था कि वह परमेश्वर के लोगों से वैसे वैसा ही व्यवहार करे जैसा कि परमेश्वर उनसे व्यवहार करता। और इसका अर्थ था उनके साथ दयापूर्ण व्यवहार करना। एक आदर्श राजा एक दयापूर्ण होता था जो परमेश्वर की देखभाल के नमूने को प्रकट करता था। यीशु ने उनके राजा के रूप में इस्राएल पर अद्‌भुत दया दिखाई। उसने उन्हें बड़े धैर्य से निर्देश और उत्साह देते हुए उनके साथ कई वर्ष बिताए। उसने अनगिनित आश्चर्यकर्म किए - उनकी बीमारियों को चंगा किया, दुष्टात्माओं को निकाला, भूखों को लिए भोजन को उत्पन्न किया, और यहाँ तक कि मृतकों को जिलाया।

परंतु शायद वह आश्चर्यकर्म जो उसकी राजकीय दया को सर्वोत्तम तरीके से प्रकट करता है, वह है लकवे के रोगी को चंगा करना, जिसका वर्णन मत्ती 9:1-7, मरकुस 2:1-11 और लूका 5:17-25 में पाया जाता है। उस घटना में, यीशु ने न केवल उस मनुष्य के लकवे को चंगा किया, बल्कि वास्तव में उसने उसके पापों को भी क्षमा किया। और उसने ऐसा ही कुछ लूका 7:36-50 में किया, जहाँ उसने उस स्त्री के पाप क्षमा किए जिसने उसके पैरों का इत्र से अभिषेक किया था।

> इस प्रश्न का सही-सही उत्तर देना बहुत ही महत्वपूर्ण है : केवल परमेश्वर ही पापों को क्यों क्षमा कर सकता है? बाइबल में इसका उत्तर यह है, क्योंकि वही है जिसके विरूद्ध हमने पाप किया है। वह प्रभु है। वह सृष्टिकर्त्ता है। वही है जिसने हमारी रचना की है। हम हर बात में उसके ऋणी हैं। और हमारा पाप सबसे पहले उसी के विरूद्ध है। अब, पाप का एक दूसरे के प्रति भी अर्थ है। ब्रह्मांड के प्रति भी पाप का अर्थ है। परंतु परमेश्वर के समक्ष उसके स्वरूप होने के नाते हमारे संबंध में सबसे पहले उसके विरुद्ध हमारा विद्रोह उसके विरूद्ध पाप है। केवल वही हमारे पापों को क्षमा कर सकता है। आप भजन 51 के विषय में सोचें जहाँ दाऊद कहता है, "केवल तेरे और तेरे ही विरूद्ध मैं ने पाप किया है।" आप दाऊद के जीवन के विषय में सोचें, मेरा अर्थ है, उसने बहुत से अन्य लोगों के विरूद्ध पाप किया था। उसने राष्ट्र को प्रभावित किया था; उसने ऊरिय्याह को प्रभावित किया था; उसने बेतशेबा को प्रभावित किया था; उसने अपने पुत्र को प्रभावित किया था। परंतु दाऊद उचित रीति से देखता है कि अंततः उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था। हमारी समस्या, और मानवीय समस्या यह है कि लोग यह नहीं देख पाते कि केवल परमेश्वर ही है जो क्षमा कर सकता है। केवल परमेश्वर ही है जो हमारे पाप की समस्या का समाधान कर सकता है।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

> जब मैं किसी के विरूद्ध पाप करता हूँ या कोई मेरे विरुद्ध पाप करता है, और क्षमा की याचना की जाती है और क्षमा प्राप्त कर ली जाती है, तो मनुष्यों के बीच यह होता है कि एक पक्ष यह कहता है, "मैं उस अपराध को जो आपने मेरे विरुद्ध किया है, हमारे सतत संबंध में रुकावट बनने की अनुमति नहीं दूँगा।" यह महत्वपूर्ण है, जो हमें एक दूसरे के प्रति अपनी समझ के प्रतिबिंब के रूप में करना चाहिए कि कैसे हमें परमेश्वर के द्वारा क्षमा किया गया है। परंतु जब परमेश्वर क्षमा करता है, तो वह ऐसे क्षमा करता है जो वास्तव में मेरे दोष के ऋण को रद्द कर देता है, और यह कुछ ऐसा है जो मैं किसी और के लिए नहीं कर सकता और न ही कोई मेरे लिए नहीं कर सकता है। अतः परमेश्वर ऐसे क्षमा करता है जो मेरे दोष के

> ऋण को रद्द कर देता है। यह ईश्वरीय क्षमा है, जो इसे बहुत ही रोचक बना देती है, उदाहरण के लिए मरकुस 2 में जब यीशु लकवे के रोगी को चंगा कर रहा था तो उसने उससे कहा, "मेरे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।" वहाँ बैठे शास्त्री यह सब देख रहे थे, और हमें बताया गया है कि अपने हृदयों में वे चुपचाप यह सोच रहे थे, "यह मनुष्य कौन है जो पापों को क्षमा करने का दावा करता है क्योंकि परमेश्वर को छोड़ कोई ऐसा नहीं कर सकता," और वास्तव में यहाँ इसी तर्क पर बल दिया गया है। वे यीशु को यह कहते हुए सुनते हैं कि वह इस मनुष्य को उसी रीति से क्षमा कर रहा है कि जिस रीति से केवल परमेश्वर क्षमा कर सकता है, और वे इसके कारण व्याकुल हो जाते हैं; वे अनुमान लगाते हैं कि वह ईशनिंदा कर रहा है। इसका अर्थ है कि उन्होंने उसे सही रीति से सुना है और उन्होंने उसके प्रति गलत रीति से प्रतिक्रिया दी है। यह सुसमाचारों में यीशु के ईश्वरत्व का प्रभावशाली प्रमाण है। यह कि उसकी अपनी समझ में, उसका अपना दावा पापों को क्षमा करने का दावा है, न केवल संबंधों में आई रुकावटों को हटाने का - संभवतः उसने लकवे के इस रोगी को पहले कभी न देखा हो - बल्कि इस रीति से पापों को क्षमा करने का जो वास्तव में उनके दोष को ऐसे रद्द करता है जैसे केवल परमेश्वर कर सकता है।
>
> — डॉ. राबर्ट लिस्टर

सारे पाप परमेश्वर के विरुद्ध अपराध और दोष हैं, और वह स्वयं ही धार्मिकता का परम स्तर है। यही नहीं, क्योंकि केवल परमेश्वर ही सर्वोच्च राजा और परम न्यायी है, इसलिए केवल वही है जिसमें उसके विरुद्ध किए गए इन अपराधों को क्षमा करने का अधिकार है। केवल उसी के पास इस स्तर पर दया को प्रदर्शित करने का अधिकार है। परंतु क्योंकि यीशु परमेश्वर का सिद्धतापूर्ण धर्मी वासल राजा था, इसलिए परमेश्वर ने उसे क्षमा प्रदान करने का अधिकार दिया, जिससे यीशु भी अपने लोगों पर परमेश्वर की दया को लागू कर सका।

तीसरा तरीका जिसमें यीशु ने राजा के कार्य को पूरा किया, वह परमेश्वर की व्यवस्था को इस तरीके से क्रियान्वित करने के द्वारा था जिसने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित किया।

विश्वासयोग्यता

जैसा कि हमने न्याय और दया के साथ किया था, वैसे ही हम यीशु द्वारा विश्वासयोग्यता के प्रोत्साहन को दो भागों में देखेंगे, हम अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र के साथ आरंभ करेंगे। सबसे प्रत्यक्ष तरीका जिसमें यीशु ने हृदय से अनुभव की जाने वाली आराधना और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता को प्रोत्साहित किया, वह था अन्यजाति के राष्ट्रों में परमेश्वर के राज्य का प्रचार करना। हम इसे मत्ती 4:13-25, 24:14, लूका 24:47 और विशेषकर मत्ती 28:18-20 और प्रेरितों के काम 1:8 में यीशु द्वारा अपने शिष्यों को दिए आदेशों में देखते हैं। इन दोनों आदेशों में यीशु ने अपने अनुयायियों को सब जातियों के लोगों को चेला बनाने का और पृथ्वी की छोर तक उसके गवाह बनने का आदेश दिया।

और निस्संदेह, यीशु ने राष्ट्रीय स्तर पर भी विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित किया। अन्यजातियों में अपने अंतर्राष्ट्रीय कार्य के समान, यीशु ने इस्राएल राष्ट्र में विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित किया, विशेषकर सुसमाचार के अपने प्रचार के द्वारा। जब वह एक नगर से दूसरे नगर गया, तो उसने लोगों को पश्चाताप करने, अर्थात् पापों से फिरकर परमेश्वर के प्रति वफ़ादार बनने का आदेश दिया, क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुँचा था। सुनिए किस प्रकार मत्ती 4:17 में मत्ती ने यीशु के प्रचार को सारगर्भित किया :

> उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।" (मत्ती 4:17)

हम ऐसे ही सारांशों को मरकुस 1:15, और लूका 5:32 और 10:13 में देखते हैं। और हम इस तरह के प्रचार के उदाहरणों को सुसमाचारों में भी कई स्थानों पर पाते हैं।

> यीशु ने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता पर काफी बल दिया। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि विश्वासयोग्यता भरोसे की एक अभिव्यक्ति है। यह इस बात को महसूस करने की अभिव्यक्ति है कि परमेश्वर वास्तव में सब बातों से बढ़कर हमारी विश्वासयोग्यता, हमारे भरोसे, हमारी आज्ञाकारिता, हमारी भक्ति को प्राप्त करने के योग्य है। जब आप डॉक्टर के आदेश की अवहेलना करते हैं, तो आप केवल उसके आदेश के बारे में ही कुछ नहीं कह रहे हैं; बल्कि आप उस डाक्टर के बारे में कुछ कह रहे हैं। और जब आप परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते हैं, तो आप केवल उसकी आज्ञाओं के बारे में ही कुछ नहीं कह रहे हैं जिनकी आप अवहेलना कर रहे हैं, बल्कि आप उस परमेश्वर के बारे में भी कुछ कह रहे हैं जिसने उन आज्ञाओं को दिया है। और इस प्रकार विश्वासयोग्यता भरोसे की अभिव्यक्ति है। यह परमेश्वर को ऐसे देखने की अभिव्यक्ति है कि वह कौन है, और फिर निस्संदेह वह करने की भी जो वह कहता है। अतः परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता आज्ञाकारिता की अभिव्यक्ति है। यह उसमें प्रतिदिन की भक्ति और भरोसे की एक अभिव्यक्ति है, जो वह है। पौलुस रोमियों में अपनी प्रैरितिक सेवकाई में मसीही जीवन के बारे में एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बात करता है जिसे विश्वास की आज्ञाकारिता में अगुवाई करनी चाहिए। यह एक सुंदर अभिव्यक्ति है जो कुछ रूपों में मसीही जीवन को सारगर्भित करती है। हम परमेश्वर को वैसे देखते हैं जैसा वह है, हम उस पर अपना भरोसा रखते हैं, और वह स्वाभाविक रूप से आज्ञाकारिता की ओर अगुवाई करता है। हम उस परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं जिस पर हम भरोसा करते हैं।
>
> — डॉ. के. ऐरिक थोनेस

> विश्वासयोग्यता ही वह है जिसे यीशु ने हमें उसके साथ चलने,अर्थात् उसे घनिष्ठता से जानने के आनंद के रूप में प्रदान किया है। परंतु वह भी प्रतिदिन मुझसे मेरे प्रत्युत्तर को चाहता है। वह मुझे आज्ञा मानने के लिए मजबूर नहीं कर रहा है। वह मुझसे किसी नियम का अनुसरण नहीं करवा रहा है। वह कहता है, तुम्हारे मनोभाव कैसे भी क्यों न हों, संसार में तुम्हें कुछ भी चलता हुआ चाहे महसूस क्यों न होता हो, बुरा या भला, मुझे एक विश्वासयोग्य हृदय चाहिए, मुझे एक विश्वासयोग्य दुल्हन चाहिए। मुझे एक विश्वासयोग्य सेवक, मेरे हृदय का एक विश्वासयोग्य प्रेमी चाहिए। और मैं यही सोचता हूँ कि वह मुझ जैसे व्यक्तियों से करवा रहा था जो संसार को इस रूप में देखते हैं मैं आत्मिकता को कैसे परिभाषित कर सकता हूँ। प्रभु कहता है कि इससे भी अधिक गहरा कुछ है। मुझे एक विश्वासयोग्य हृदय की आवश्यकता है। एक विवाहित जोड़े के समान, वही सच्चे प्रेम का आधार है। मार्ग में चाहे जो भी आ जाए, विश्वासयोग्यता बनी रहनी चाहिए। अतः प्रभु विश्वासयोग्यता की माँग करता है, परंतु वह अपने पवित्र आत्मा की उपस्थिति के द्वारा विश्वासयोग्यता के लिए योग्य भी बनाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

— डॉ. बिल ऊरी

राजा के कार्यभार के लिए यीशु की राजकीय योग्यताओं और उसके कार्य को देख लेने के बाद, हम अब यह देखने के लिए तैयार हैं कि उसने मसीहारूपी राजा के भविष्य के लिए पुराने नियम की अपेक्षाओं को कैसे पूरा किया।

अपेक्षाएँ

इस्राएल के पूरे इतिहास में, उसके राजाओं की निर्बलताओं और पापपूर्णता ने उन्हें परमेश्वर के समक्ष उनके दायित्वों को पूरा करने में रुकावट उत्पन्न की। यहाँ तक कि मूसा, यहोशू और दाऊद जैसे विश्वासयोग्य अगुवे भी, जिन्होंने स्वयं को परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति समर्पित कर दिया और अपने लोगों की देखभाल की, वे भी उन सब कार्यों को नहीं कर पाए जिनकी माँग परमेश्वर ने की थी। अपने सर्वोत्तम प्रयास में, उन्होंने कुछ ही समय के लिए शांति और सुरक्षा को प्रदान की। परंतु व्यवस्था की माँगें उनके लिए इतनी बड़ी थीं कि वे निरंतरता के साथ उसे पूरा नहीं कर पाए। सामान्य तौर पर परमेश्वर की इच्छा को पूरी पूरा' करने में किसी पतित मनुष्य के लिए व्यवस्था को पूरा करना बहुत ही कठिन है। यही नहीं, सर्वोत्तम उत्तम अगुवे भी अपनी आयु और मृत्यु के द्वारा सीमित थे। ऐसी समस्याओं को बाइबल में कई स्थानों पर देखा जा सकता है, जिनमें जकर्याह 4:6, प्रेरितों के काम 13:34-39, इब्रानियों 4:8 और रोमियों 8:3-4 सम्मिलित हैं।

जिन राजाओं ने पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों पर राज्य किया उन्होंने कभी अपने लोगों के लिए परमेश्वर की सर्वोच्च आशीषों को प्राप्त नहीं किया। वे ऐसा कर नहीं सके। वे निर्बल, पतित मनुष्य थे। परंतु उनकी असफलताओं ने एक आशा को उत्पन्न किया कि परमेश्वर अंततः अपने लोगों को बचाने के लिए दाऊद के एक धर्मी पुत्र को भेजने के द्वारा दाऊद के साथ बाँधी अपनी वाचा को आदर देगा। इस राजा को परमेश्वर के आत्मा के द्वारा विशेष रूप से सामर्थ्य प्रदान किया जाएगा ताकि उसमें मानवीय दुर्बलताओं की सामान्य सीमाएँ न हों। वह दाऊद के वंश, और इस्राएल राष्ट्र और मनुष्यजाति की पिछली असफलताओं के मुक्तिदाता के रूप में परमेश्वर की व्यवस्था का सिद्धता से पालन करने वाला व्यक्ति होगा। और परमेश्वर ने यीशु में इसी प्रकार के राजा को भेजा है। यीशु के द्वारा - जो दाऊद का धर्मी पुत्र, अर्थात् मसीह है - परमेश्वर ने अंततः मनुष्यजाति के लिए वह कार्य किया जिसे हम स्वयं नहीं कर सकते थे।

हम उसके राजत्व के चार पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा देखेंगे कि यीशु ने पुराने नियम की अपेक्षाओं को कैसे पूरा किया। पहला, हम यह देखेंगे कि यीशु ने दाऊद के राजवंश को पुनर्स्थापित किया। दूसरा, हम उस स्वतंत्रता और विजय पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो उसने अपने लोगों को प्रदान की। तीसरा, हम अनंत राज्य पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो यीशु लेकर आया। और चौथा, हम उस राज्य के विश्वव्यापी चरित्र पर ध्यान केंद्रित करेंगे। आइए हम इस सच्चाई से आरंभ करें कि यीशु ने दाऊद के राजवंश को पुनर्स्थापित किया।

दाऊद का राजवंश

नए नियम में कई अवसरों पर यीशु को दाऊद के ऐसे भविष्यद्वाणीय पुत्र के रूप में पहचाना गया है जो दाऊद के राजवंश को पुनर्स्थापित करता है। प्रेरणा-प्राप्त लेखकों ने मत्ती 1:1, लूका 3:31 और रोमियों 1:3 में इन संबंधों को दर्शाया है। प्रेरित पौलुस ने इसका दावा प्रेरितों के काम 13:22-23 में किया है। और स्वयं यीशु ने मत्ती 21:15-16, प्रकाशितवाक्य 3:7 और 22:16 में दाऊद के मसीहारूपी पुत्र होने का दावा किया। यह प्रमाण इस बात को दर्शाता है कि यीशु वास्तव में दाऊद का भविष्यद्वाणीय पुत्र, अर्थात् भविष्य का मसीहारूपी राजा था जो सारी सृष्टि के लिए परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों को पूरा करेगा।

दाऊद के सिंहासन के उत्तराधिकारी होने के रूप में, यीशु ने परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों को पूरा करना आरंभ किया, उसने पहले तो इस्राएल राष्ट्र में बचे विश्वासयोग्य लोगों अर्थात् अपने विश्वासयोग्य प्रेरितों और शिष्यों को पुनर्स्थापित करने के द्वारा ऐसा किया। और फिर, जैसा कि यीशु ने मत्ती 28:19-20 में आज्ञा दी है, इन अनुयायियों ने जिस किसी राष्ट्र में वे पहुँच सकते थे वहाँ पहुंचकर यहूदियों और अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाने और चेले बनाने के द्वारा अपनी सीमाओं को बढ़ाया। और उनके चेले और अधिक चेले बनाते हुए संसार में और आगे तक बढ़ते गए। यह प्रक्रिया इस परिणाम के साथ तब से निरंतर जारी है, कि परमेश्वर के पृथ्वी पर के राज्य में संसार की एक बहुत बड़ी जनसँख्या सम्मिलित है, और यह कुछ हद तक पृथ्वी के लगभग हर गोत्र और देश में उपस्थित है।

यीशु ने उन लोगों को जो उसके प्रति विश्वासयोग्य थे, स्वतंत्रता और विजय प्रदान करने के द्वारा पुराने नियम की अपेक्षाओं को पूरा किया।

स्वतंत्रता और विजय

पृथ्वी पर के अपने जीवन के दौरान, यीशु ने अपने लोगों को पाप, मृत्यु और दुष्टात्माओं जैसे उनके आत्मिक शत्रुओं पर विजय दिलवाने के द्वारा स्वतंत्रता प्रदान की। मत्ती 1:21-23 से इन शब्दों को सुनिए :

> [प्रभु के एक स्वर्गदूत ने यूसुफ से कहा] "वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।" यह सब इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो : "देखो एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा," जिसका अर्थ है - परमेश्वर हमारे साथ। (मत्ती 1:21-23)

इस अनुच्छेद में मत्ती ने यीशु के जन्म की तुलना बालक इम्मानुएल से की जिसका उल्लेख यशायाह 7:14 में किया गया है।

यशायाह की भविष्यद्वाणी की पृष्ठभूमि में बालक इम्मानुएल यह चिह्न था कि परमेश्वर योद्धा राजा है जो युद्ध में अपने लोगों के साथ है। वह उनके लिए लड़ेगा और उनके शत्रुओं को पराजित कर देगा, वह युद्ध में विजय प्राप्त करने के द्वारा उन्हें अत्याचार से स्वतंत्र करेगा। और इसी बात ने यीशु को इतना विशेष बनाया। वह भविष्यद्वाणी किया हुआ राजा था जिसका प्रयोग परमेश्वर युद्ध लड़ने और सबसे बड़े शत्रु, अर्थात् पाप को पराजित करने में करेगा। हम इसी विषय को यूहन्ना 8:36 में देखते हैं, जहाँ यीशु ने कहा कि केवल वही पाप से सच्ची स्वतंत्रता दे सकता है।

यीशु ने अपने लोगों को मृत्यु पर भी विजय दी। पौलुस ने रोमियों 6:4-9, और 1 कुरिन्थियों 15:54-57 में इसके बारे में बात की है, जहाँ उसने हमें आश्वस्त किया कि यीशु के पुनरुत्थान ने हमारे बदले पाप और मृत्यु को पराजित कर दिया। अब एक भाव में, पाप और मृत्यु हमारे लिए अभी भी समस्या बने हुए हैं, क्योंकि हम अभी भी पाप करते हैं और हमारे शरीर अभी भी मरते हैं। परंतु हमने इन शत्रुओं पर पहले ही विजय प्राप्त कर ली है क्योंकि अब उनके पास हम पर अधिकार रखने और दोष लगाने की शक्ति नहीं है।

और यही बात दुष्टात्माओं पर भी लागू होती है। हमारे महान राजा के रूप में, यीशु ने उन्हें पराजित कर दिया है, और हमें विजय दे दी है। वह अभी भी हमें परेशान करती और परीक्षा में डालती हैं। और वे हमें शारीरिक तौर पर भी नुकसान पहुँचा सकती हैं। परंतु उनके पास हमें बंधन में बाँधने या हमारी आत्माओं को हानि पहुँचाने की शक्ति नहीं है। सुनिए किस प्रकार पौलुस ने कुलुस्सियों 2:15 में दुष्टात्माओं पर यीशु की विजय का वर्णन किया है :

> और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय- जयकार की ध्वनि सुनाई। (कुलुस्सियों 2:15)

जब यीशु वापस आएगा, तो वह उस प्रत्येक शत्रु को पूरी तरह से पराजित करेगा जो उसका और उसके लोगों का विरोध करते हैं। परंतु अभी भी, उसने उन लोगों के विरुद्ध आरंभिक दंड को क्रियान्वित कर दिया है जो हमें सबसे अधिक हानि पहुँचाते हैं, ताकि वह उनके स्वामित्व से हमारी स्वतंत्रता को सुरक्षित करे।

राजाओं से पुराने नियम की तीसरी अपेक्षा जिसे यीशु ने पूरा किया यह थी कि उसने अनंतकालीन राज्य की स्थापना की।

अनंतकालीन राज्य

पुराने नियम ने पहले से ही कह दिया था कि प्रतिज्ञात राजा एक ऐसे राज्य का सूत्रपात करेगा जो कि सदैव के लिए होगा। यह पृथ्वी पर स्वर्ग के समान होगा, और यह दाऊदवंशी राजा के अधीन सदैव बना रहेगा। और नया नियम मत्ती 19:28-29 और 25:34, लूका 1:33 और इब्रानियों 1:8-13 जैसे अनुच्छेदों में पुष्टि करता है कि राजा के रूप में यीशु का राज्य सदैव बना रहेगा। परंतु यह राज्य अब कहाँ हैं? क्या यीशु ने वास्तव में इस अपेक्षा को पूरा किया? या हम अभी भी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह इसे पूरा करेगा?

> पृथ्वी पर की अपनी सेवकाई के दौरान एक कार्य जो यीशु ने किया, वह था पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को स्थापित करना। अब, इसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि ईश्वरीय सामर्थ्य के एक कार्य में, यीशु ने एक विरोधी क्षेत्र में मोर्चा बाँधा और एक आक्रमण को आरंभ किया जिसका लक्ष्य इस पृथ्वी को उसके उस सृष्टिकर्त्ता और स्वामी और राजा को फिर से सौंप दे जिसका उस पर सच्चा हक़ है। विरोधी क्षेत्र में इस आरंभिक आक्रमण ने स्वयं को कई नाटकीय तरीकों से प्रकट किया : प्रणालीगत बुराई को चुनौती देना, दुष्टात्मा-संबंधी बुराई को चुनौती देना, प्रकाश और सच्चाई के द्वारा धोखे को दूर करना। यह एक वैकल्पिक निष्ठा का शक्तिशाली परिचय था। यह अभियान अभी भी चल रहा है। साफ़-सफाई के कार्य अभी बाकी हैं, अंतिम प्रतिरोधों को हटाया जाना है। और अंतिम शत्रु जिस पर विजय पाना अभी बाकी है, वह मृत्यु है। और इस प्रकार, जब हम इस निरंतर चलने वाले राज्य के अभियान में आत्मा के सामर्थ्य में भाग लेते हैं तो हम प्रार्थना करते हैं, "तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पूरी हो।" अभी भी ऐसा कुछ है जिसे प्राप्त करने के लिए हमें अलौकिक सहायता की आवश्यकता है।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

> पुराने नियम की अपेक्षा को पूरा करने में परमेश्वर का उद्धार का शासन यीशु मसीह में इस संसार में आरंभ हो चुका है, जिसकी पूर्णता उसकी मृत्यु, और उसके पुनरूत्थान में हुई, उसका पुनरूत्थान यह प्रदर्शित करता है कि उसकी मृत्यु विजयी रही है। पाप का निपटारा कर दिया गया है। पाप के परिणामस्वरूप आई मृत्यु को हरा दिया गया है। और न केवल पुनरूत्थान में, बल्कि उसके महिमामयी स्वर्गारोहण में भी - वह अब परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है। पिंतेकुस्त के दिन में - उसने अपने आत्मा को उंडेल दिया है। यह सब राज्य के आगमन का

> भाग है। जिसे हम, "राज्य का आरंभ" कहते हैं, यह अब यहाँ है। फिर भी, हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमें यह बताया है कि अभी भी भविष्य है। हम अभी भी प्रार्थना करते हैं। प्रभु की प्रार्थना के बारे में सोचें, हम यह प्रार्थना करते हैं, "तेरा राज्य आए।" राज्य आ चुका है। उसने विजय प्राप्त कर ली है। यह अभी भी अपनी पूर्णता की प्रतीक्षा कर रही है।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

> लोगों के लिए समझने में, विशेषकर यहूदी लोगों के लिए समझने में सबसे कठिन बात, मसीहा यीशु के पहले और दूसरे आगमन के बीच का संबंध है। यह समझने योग्य है कि लोग ऐसा कहेंगे कि यीशु मसीहा कैसे हो सकता है, और कैसे मसीहा- संबंधी अपेक्षाओं को पूरा कर सकता है, जबकि हम शेरों को मेमनों के साथ लेटते नहीं देखते हैं। हम लोगों को अपनी तलवारों को पीटकर हल के फाल बनाता हुआ नहीं देखते हैं। हम पृथ्वी पर शांति, लोगों के प्रति सद्भावना नहीं देखते। अतः यह कैसे हो सकता है कि मसीह आ चुका है? यह वह है जिसे हम आरंभ हो चुकी युगांतविद्या कहते हैं। यह विचार कि यीशु के पहले आगमन के साथ अंत-समय की वास्तविकताओं को इतिहास में लाया गया है। उनका उद्घाटन कर दिया गया है, उन्हें एक निर्णायक रूप से आरंभ और शुरू कर दिया गया है, परंतु अभी भी उन पर इस हद तक तक कार्य किया जा रहा है जहाँ अंततः इन वास्तविकताओं की पूर्णता होगी। इसे राज्य का "अभी और अभी नहीं" सिद्धांत कहा जाता है। यह कि राज्य आ चुका है, यीशु इसे ले आया है। उसने युद्ध में निर्णायक आघात जड़ दिया है। परंतु युद्ध अभी भी लड़ा जा रहा है और यह एक भविष्य, अर्थात् आने वाले समय में परम पूर्णता की प्रतीक्षा कर रहा है।
>
> — डॉ. के. ऐरिक थोनेस

स्वर्ग में अपने सिंहासन पर विराजमान होने के लिए स्वर्ग पर चढ़ने से पहले ही यीशु ने अपने मसीहा-संबंधी राज्य को स्पष्ट रूप से स्थापित कर दिया था। हम इसे मत्ती 12:28 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं, जहाँ यीशु ने कहा कि दुष्टात्माओं को निकालने की उसकी शक्ति ने यह प्रमाणित किया कि वह पहले से ही परमेश्वर के राज्य को ले आया है। दुष्टात्माओं को निकालना ऐसा कोई चिह्न नहीं था कि राज्य आ रहा है। इसकी अपेक्षा, यह इस बात का प्रमाण था कि राज्य पहले से ही सामर्थ्य में उपस्थित था, और यह कि उसका राजा अपने शत्रुओं को बाहर निकाल रहा है। और जबकि कुछ विद्वान इस पर आपत्ति करते हैं कि राज्य दृश्य रूप से नहीं आया जैसा कि बहुतों ने अपेक्षा की थी, फिर भी यीशु ने इस बात पर जोर दिया कि परंपरागत राजनैतिक शक्ति के भाव में उसके भौतिक प्रकटीकरण को ढूँढना एक गलती थी। जैसा कि लूका 17:20-21 में उसने फरीसियों से कहा :

> "परमेश्वर का राज्य दृश्य रूप में नहीं आता। और लोग यह न कहेंगे, 'देखो, यहाँ है, या वहाँ है।' क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।" (लूका 17:20-21)।

अंततः, दाऊदवंशी राजा से पुराने नियम की चौथी अपेक्षा जिसे यीशु ने पूरा किया, यह थी कि वह विश्वव्यापी राज्य को स्थापित करे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विश्वव्यापी राज्य

जब यीशु वापस आएगा, तो संपूर्ण नई पृथ्वी उसके राज्य का भाग होगी। और उसका भौतिक सामर्थ्य और शासन सारी पृथ्वी की सरकारों का स्थान ले लेगा। इस समय, उसका सार्वभौमिक शासन प्राथमिक रूप से आत्मिक है, जैसा कि हम इफिसियों 1:21-22 में देखते हैं। परंतु जब वह वापस आएगा, यह भौतिक भी होगा। प्रकाशितवाक्य 21-22 नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के वैभवशाली चित्र को रेखांकित करता है, जहाँ यीशु एक राजा के रूप में नए यरूशलेम की अपनी राजधानी से राज्य करेगा।

नया नियम यह स्पष्ट करता है कि यीशु दीर्घ प्रतीक्षारत मसीहरूपी राजा, दाऊद का पुत्र है जो परमेश्वर के राज्य को लाने के लिए इस पृथ्वी पर आया। उसने पृथ्वी पर की अपनी सेवकाई के दौरान पुराने नियम की सारी भविष्यद्वाणियों और अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया। परंतु उसने उनमें से बहुत सी को पूरा किया कि उसने यह प्रमाणित किया कि वह सच्चा राजा है, और उसने हमें आश्वस्त किया है कि वह उसे पूरा करने के लिए फिर से आएगा जो उसने आरंभ किया है। उस दिन, उसका राज्य सृष्टि के परमेश्वर के वास्तविक उद्देश्यों को पूरी सिद्धता से पूरा करेगा। संपूर्ण संसार परमेश्वर का पृथ्वी पर का राज्य होगा, जो पाप और पीड़ा से मुक्त होगा, शांति और संपन्नता में सुरक्षित होगा, और परमेश्वर की उपस्थिति और संगति से आशीषित होगा।

यीशु राजा है के अध्याय में अब तक हमने यीशु के राजा के कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि और मसीह में इस कार्यभार की पूर्णता को खोजा है। अतः अब हम अपने अंतिम मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : राजा के रूप में यीशु की भूमिका का आधुनिक उपयोग।

आधुनिक उपयोग

जहाँ यीशु के राजत्व के आधुनिक उपयोगों का वर्णन करने के कई तरीके हैं, वहीं एक सहायक नमूना वेस्टमिंसटर लघु प्रश्नोत्तरी के प्रश्न और उत्तर 26 में पाया जा सकता है। इस प्रश्न के उत्तर में,

> प्रश्न - यीशु राजा के कार्यभार को किस प्रकार क्रियान्वित करता है?

प्रश्नोत्तरी इस प्रकार उत्तर देती है,

> उत्तर - मसीह, हमें अपने अधीन करने में, हम पर शासन करने और हमारी रक्षा करने में, और अपने और हमारे सब शत्रुओं को नियंत्रित रखने और उन पर विजय प्राप्त करने में राजा के कार्यभार को क्रियान्वित करता है।

यह उत्तर उन तरीकों का वर्णन करता है जिनमें यीशु का राजत्व विधिवत धर्मविज्ञान की तीन परंपरागत श्रेणियों के आधार पर हमारे जीवनों को प्रभावित करता है। पहली, यीशु हमें अपने अधीन करता है, अर्थात् वह हमें अपने राज्य में लेकर आता है, जिससे हम अब उसके शत्रु नहीं बल्कि उसके प्यारे नागरिक हैं। दूसरी, वह हम पर राज्य करने और हमारी रक्षा करने के द्वारा अपने राज्य को संचालित करता है। और तीसरी, वह अपने और हमारे शत्रुओं को नियंत्रित करता है और अंततः उन पर विजय प्राप्त करता है।

वेस्टमिंसटर लघु प्रश्नोत्तरी द्वारा दिए गए बल का अनुसरण करते हुए, हम यीशु के राजा के कार्यभार के आधुनिक उपयोग पर तीन भागों में चर्चा करेंगे : पहला, हम देखेंगे कि यीशु अपने राज्य को स्थापित करता है। दूसरा, हम इस सच्चाई पर ध्यान देंगे कि वह अपने लोगों को संचालित करता है। और

तीसरा, हम उस तरीके पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे जिसमें वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। आइए हम पहले यह देखें कि यीशु कैसे अपने राज्य का निर्माण करता है।

वह अपने राज्य का निर्माण करता है

हम इस बात पर ध्यान देंगे कि यीशु कैसे तीन दृष्टिकोणों से अपने राज्य का निर्माण करता है : पहला, उसके कार्य का लक्ष्य; दूसरा, संसार में उसके राज्य का प्रकटीकरण; और तीसरा, वे तरीके जिनका प्रयोग यीशु अपने राज्य का निर्माण करने के लिए कर रहा है। आइए यीशु के कार्य के लक्ष्य से आरंभ करें।

लक्ष्य

पवित्रशास्त्र शिक्षा देता है कि परमेश्वर पूरे संसार को अपने पृथ्वी पर के राज्य में बदलने की योजना बनाता है ताकि इस पृथ्वी पर उसका राज्य स्वर्ग में उसके राज्य को प्रतिबिंबित करे। हम इसे मत्ती 6:10 जैसे स्थानों में देखते हैं, जहाँ यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया कि परमेश्वर का राज्य आए, और उसकी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर पूरी हो। और हम इसे प्रकाशितवाक्य 21-22 में वर्णित नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के चित्र में देखते हैं। अतः विस्तृत रूप से कहें तो, यीशु द्वारा राज्य के निर्माण का लक्ष्य संसार को परमेश्वर के पृथ्वी पर के राज्य में बदलने, उसके निवास के उपयुक्त बनाने, और ऐसे लोगों से भर देने का है जो उसके प्रति पूरी तरह से विश्वासयोग्य हों।

परंतु यदि लक्ष्य परमेश्वर द्वारा पृथ्वी पर के राज्य को प्राप्त करने का है, तो इसमें यीशु की क्या भूमिका है? यद्यपि परमेश्वर सारी सृष्टि पर सर्वोच्च राजा है, फिर भी उसने यीशु को प्रत्यक्ष रूप से इस पर शासन करने के लिए नियुक्त किया है, जिससे परमेश्वर के राज्य को सही रूप में यीशु का राज्य भी कहा जाता है। इस विषय में, परमेश्वर प्राचीन मध्य-पूर्वी सुजेरियन के समान है, और यीशु उसका वासल राजा है। और क्योंकि यीशु अपने सुजेरियन को प्रसन्न करना चाहता है, इसलिए उसने स्वयं को परमेश्वर के लक्ष्य को पूरा करने के प्रति समर्पित कर दिया है। सुनिए कैसे पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:24, 28 में परमेश्वर पिता के प्रति यीशु के समर्पण का वर्णन किया :

> इसके बाद अंत होगा। उस समय वह (मसीह) सारी प्रधानता, और सारा अधिकार, और सामर्थ्य का अंत करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। और जब सब कुछ उसके अधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके अधीन हो जाएगा, जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो। (1 कुरिन्थियों 15:24, 28)

परमेश्वर के सर्वोच्च वासल राजा होने के रूप में, यीशु के पास परमेश्वर के राज्य पर और सृष्टि पर भी अधिकार है। और वह इस अधिकार का प्रयोग उन सब बातों पर विजय प्राप्त करने जो परमेश्वर का विरोध करती हैं, और सब बातों को परमेश्वर के अधीन लाने के लिए कर रहा है, ताकि वह परमेश्वर की सृष्टि के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करे।

परंतु इस लक्ष्य का हमारे लिए क्या अर्थ है? आधुनिक मसीहियों को इस विचार के प्रति किस प्रकार प्रतिक्रिया देनी चाहिए कि यीशु का लक्ष्य पूरे संसार को परमेश्वर के राज्य में बदल देने का है? इसका सरल उत्तर यह है कि हमें अपने जीवनों के लिए भी परमेश्वर के राज्य को मुख्य लक्ष्य बना लेना चाहिए। हमारे अन्य जो भी लक्ष्य हों - जीविका कमाना, अपने परिवारों की जरूरतों को पूरा करना, स्वस्थ रहना, शिक्षा प्राप्त करना - उनका अनुसरण इस प्रकार किया जाना चाहिए कि उनसे परमेश्वर के राज्य की उन्नति हो। जैसा कि यीशु ने मत्ती 6:33 में सिखाया है :

> इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी। (मत्ती 6:33)

यीशु किस तरह से अपने राज्य का निर्माण करता है उसके जिस दूसरे पहलू का हम उल्लेख करेंगे, वह है संसार में राज्य का प्रकटीकरण।

प्रकटीकरण

सदियों से बहुत से धर्मविज्ञानियों ने ध्यान दिया है कि जब नया नियम यीशु के राज्य के वर्तमान प्रकटीकरण के बारे में बातचीत करता है, तो यह अक्सर राज्य को कलीसिया के साथ जोड़ता है। राज्य और कलीसिया के बीच के संबंध का वर्णन पवित्रशास्त्र में कई स्थानों पर किया गया है, जिनमें इफिसियों 1:19-2:20; और प्रकाशितवाक्य 1:4-6 जैसे अनुच्छेद शामिल हैं। एक उदाहरण के लिए, मत्ती 16:16-19 में पतरस और यीशु के बीच के विचार-विमर्श को सुनिए :

> शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परंतु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा : और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।" (मत्ती 16:16-19)

यह अनुच्छेद कम से कम ऐसी तीन बातें कहता है जो राज्य को बड़ी निकटता के साथ कलीसिया से जोड़ती हैं। पहली, यीशु ने कहा, "मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा।" और फिर उसने यह कहते हुए इस कथन का अनुसरण किया कि वह पतरस को "स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ" देगा। यहाँ संबंध पर ध्यान दीजिए : पतरस, जो एक प्रेरित और कलीसिया के आधार का भाग है, उसके पास में स्वर्ग के "राज्य" का अधिकार होगा।

एक दूसरा विवरण जो राज्य और कलीसिया के बीच के संबंध को दर्शाता है, वह यह सच्चाई है कि पतरस ने मसीह के शीर्षक को यीशु पर लागू किया। शब्द "मसीह" का अर्थ है "अभिषिक्त जन"। यह इस वास्तविकता की ओर एक विशेष संकेत था कि सिंहासन अपने दावे को दिखाने के लिए राजाओं का तेल से अभिषेक किया जाता था। अतः यीशु को "मसीह" संबोधित करने के द्वारा पतरस यीशु की पहचान भविष्यद्वाणी किए गए दाऊदवंशी राजा के रूप में कर रहा था। और राजा होने की अपनी भूमिका में भी यीशु कलीसिया का निर्माण करने जा रहा था।

और मत्ती 16:16-19 का तीसरा विवरण जो राज्य और कलीसिया के बीच एक घनिष्ठ संबंध की ओर संकेत करता है, वह यह है कि यीशु यह चाहता था कि कलीसिया अधोलोक या "नरक" और स्वर्ग के राज्य के बीच के युद्ध में भाग ले।

ये विवरण इस सच्चाई की ओर संकेत करते हैं कि यीशु और पतरस दोनों ने कलीसिया और राज्य के विषय में बहुत ही घनिष्ठता से संबंधित अवधारणाओं के रूप में सोचा। परंतु कलीसिया और राज्य जितने भी घनिष्ठ रूप से संबंधित हों, फिर भी वे नए नियम में एक दूसरे के सटीक रूप से समरूप नहीं है। अधिकांश विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि राज्य कलीसिया की तुलना में एक बड़ी अवधारणा है।

> कलीसिया और परमेश्वर के राज्य के बीच का संबंध बहुत ही रूचिकर है। परमेश्वर का राज्य परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के प्रति इच्छापूर्ण समर्पण के लिए सब चीजों की पुनर्स्थापना का महा-दर्शन है। एक ऐसा दर्शन जो पूरे ब्रह्मांड को अपने

> में शामिल करता है, निश्चित रूप से इस ग्रह और मानव जीवन को भी। यह उस राजा के प्रति समर्पण है जो जीवन की एक अविश्वसनीय शांति को उत्पन्न करेगा जिसका उद्देश्य परमेश्वर की महिमा और हमारे बड़े आनंद के लिए किया गया था। कलीसिया परमेश्वर का एक मुख्य साधन है जिसे परमेश्वर ने इस महा-दर्शन की उन्नति के लिए चुना है। यह महत्वपूर्ण है कि कलीसिया को, और निश्चित तौर पर धार्मिक कलीसियाई संरचनाओं को, राज्य की बराबरी में न रखा जाए; वे दोनों एकसमान नहीं है, बल्कि कलीसिया लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन है। और साथ ही, कलीसिया, जो पहाड़ पर बसे एक नगर के समान है, को चाहिए कि वह अपने आन्तरिक जीवन और सामाजिक गतिविधियों में ऐसे प्रभावों को प्रकट करे जो एक दिन एक सिरे से दूसरे सिरे तक परमेश्वर की संपूर्ण सृष्टि को दिखाए। हमें परमेश्वर के राज्य के आदर्श और साथ ही साथ राज्य के दूत बनना है।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

> परमेश्वर के राज्य और कलीसिया की धारणाएँ इस संपूर्ण मसीही समझ के लिए अत्यावश्यक हैं कि हमें किस प्रकार से जीवन जीना है। परंतु मैं सोचता हूँ कि इन दोनों के बीच अंतर होना महत्वपूर्ण है। मैं सोचता हूँ कि बहुत से मसीहियों, जिनमें मैं भी शामिल हूँ, ने यही समझा है कि कलीसिया राज्य के चरमोत्कर्ष के समान है, इसलिए हम वह हैं जो महत्वपूर्ण समय में रह रहे हैं। परंतु राज्य की अवधारणा पूरे पवित्रशास्त्र में कलीसिया की तुलना में अधिक विस्तृत है। अतः जिस तरह से मैं कलीसिया को देखता हूँ, और सोचता हूँ कि बाइबल भी ऐसे ही देखती है कि कलीसिया राज्य का स्थिर अंग है, परंतु यह राज्य के कार्य का एक उप अंग या एक हिस्सा है। परमेश्वर का राज्य, उसका शासन, हमेशा से वास्तविकता का आधार रहा है। वह ब्रह्मांड, सारी सृष्टि पर शासन करने वाला प्रभु है। वह सब लोगों, सब राष्ट्रों, सब राजाओं, सब गोत्रों पर प्रभु है। अब अधिकाँश लोग यह नहीं जानते, परंतु वह है। अतः परमेश्वर का राज्य, परमेश्वर का शासन, पूरे पवित्रशास्त्र का व्यापक विषय है। आशान्वित रूप से कलीसिया वे लोग हैं जिन्होंने यीशु के प्रभुत्व के प्रति समर्पण किया है, उसके सर्वोच्च प्रभुत्व को पहचाना है और स्वयं को इस संसार में उसके दूत होने के लिए समर्पित किया है।
>
> — डॉ. बिल ऊरी

नया नियम सिखाता है कि सृष्टि पर परमेश्वर के शासन का अंतिम महिमामय चरण मसीह के पहले आगमन के समय आरंभ हुआ। उस समय से लेकर इस पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य निरंतर विकास कर रहा है और मानवीय संस्कृति के बहुत सारे पहलूओं को परमेश्वर की अधीनता में ला रहा है। और जब मसीह का पुनरागमन होगा, तो परमेश्वर का राज्य पूरी तरह से निर्विरोध होगा और प्रकृति के प्रत्येक पहलू और मानवीय संस्कृति में पूरी तरह से प्रकट होगा।

परंतु इतिहास की इस रूपरेखा में कलीसिया कैसे समाहित होती है? वास्तव में, कलीसिया इस वर्तमान युग में पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का केंद्र है। हम अब परमेश्वर के राज्य की उन्नति के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं। और जब मसीह का पुनरागमन होगा, तो हम राज्य की पूरी आशीषों को प्राप्त करेंगे। तब तक, हम वह सब सिखाने के द्वारा जो मसीह ने हमें सिखाया है, मसीह के सुसमाचार को फैलाते हैं,

ताकि मसीह के पुनरागमन से पहले परमेश्वर का प्रकट राज्य अपने अधिकतम रूप में मानवीय समाज के प्रत्येक पहलू में फ़ैल फैल जाए।

> यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि कलीसिया राज्य में अपने स्थान को समझ ले। जब हम भविष्य में उसके साथ होंगे, जब वह वापस आएगा, तो मैं नहीं सोचता कि तब हमें कलीसिया के रूप में संबोधित किया जाएगा। मैं सोचता हूँ कि वह राज्य होगा। दुल्हन को उसके दुल्हे के सामने प्रस्तुत किया जाएगा, जो पवित्रशास्त्र का एक अन्य महत्वपूर्ण चित्र है। मैं इस प्रकार से ऐसा क्यों कह रहा हूँ, मैं सोचता हूँ कि कई बार कलीसिया के रूप में हम स्वयं को बहुत बड़ा समझते हैं। हम सोचते हैं कि सब प्रश्नों का उत्तर केवल हम ही हैं, और केवल हम ही परमेश्वर का एकमात्र उद्देश्य हैं। और हम बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। उसने कलीसिया के लिए मृत्यु सही। उसने स्वयं को अर्पित करने के लिए मृत्यु सही। परंतु साथ ही उसने संसार के लिए भी मृत्यु सही। अतः मेरे लिए यीशु मसीह की कलीसिया के सदस्य के रूप में स्वयं को देखने का सर्वोत्तम तरीका यह कहना है, मेरे पास एक लक्ष्य है और वह है मसीह की देह बनना। मुझे संसार के लिए उसके हाथ, उसके पैर, उसकी भुजाएँ होने के लिए बुलाया गया है, बिल्कुल वैसे ही जैसे कि वह यदि यहाँ होता। मेरे राजा की मेरे लिए और कलीसिया के रूप में हमारे लिए यही आज्ञा है। दुखद बात यह है कि मेरे विचार से कलीसिया कई बार ऐसा कहती है, “राज्य का चरमोत्कर्ष हम हैं, अतः हम उसका परिणाम हैं जो वह करने आया है और इसलिए हम उसके फिर से वापस आने तक चुपचाप केवल बैठने जा रहे हैं या केवल उसकी उपस्थिति का आनंद लेने जा रहे हैं।” मेरे विचार से यह एक गलत दृष्टिकोण है और हमें स्वयं को सुधारने की और कलीसिया के उद्देश्य को हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता के राजकीय उद्देश्यों के साथ जोड़ने के कार्य में फिर से जुटने की आवश्यकता है।
>
> — डॉ. बिल ऊरी

अब क्योंकि हमने उस लक्ष्य पर ध्यान दे दिया है जिसके लिए यीशु अपने राज्य का निर्माण करता है, और अपने राज्य को प्रकट करता है, इसलिए हमें उन तरीकों की ओर मुड़ना चाहिए जिनका प्रयोग यीशु अपने राज्य के निर्माण के लिए करता है।

तरीके

यीशु दो प्राथमिक तरीकों से अपने राज्य का निर्माण करता है, दोनों ही प्रत्यक्ष रूप से कलीसिया को सम्मिलित करते हैं : वह कलीसिया में और अधिक लोगों को जोड़ता है, और वह इसकी भौगोलिक सीमाओं का विस्तार करता है। नए नियम में, यीशु ने प्राथमिक रूप से इस्राएल से लोगों को इकट्ठा करना आरंभ किया। परंतु अपने स्वर्गारोहण के समय उसने कलीसिया को यह निर्देश दिया कि वह उसके राज्य को यहूदिया से सामरिया, और पृथ्वी की छोर तक फैला दे, जैसा कि हम प्रेरितों के काम 1:6-8 में पढ़ते हैं। यीशु संपूर्ण मनुष्यजाति को सम्मिलित करके और संपूर्ण संसार को समाहित करके कलीसिया का विस्तार करने के द्वारा अपने राज्य का निर्माण कर रहा है।

परंतु कलीसिया के रूप में हम इस कार्य के प्रति कैसे प्रत्युत्तर देते हैं और कैसे इसमें शामिल होते हैं? सामान्यतः इसका उत्तर मत्ती 28:19-20 में दिए गए महान आदेश के इन शब्दों में मिलता है :

> इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूँ।" (मत्ती 28:19-20)

जैसा कि हम यहाँ देख सकते हैं, अपने राज्य के निर्माण के लिए यीशु जिन प्राथमिक तरीकों का प्रयोग करता है, वे हैं सुसमाचार प्रचार, बपतिस्मा और बाइबल की शिक्षाएँ। और इन तरीकों को केवल अपने द्वारा लागू करने की अपेक्षा, यीशु ने कलीसिया को यह कार्य सौंपा है कि वह उसके लिए उन तरीकों को काम में लाए। सुसमाचार प्रचार लोगों को विश्वास में लेकर आता है। बपतिस्मा उन्हें कलीसिया से जोड़ता है। और शिक्षा उन्हें उन रूपों में बढ़ने में सहायता करती हैं जो कि कलीसिया को सशक्त बनाते हैं और इसके विस्तार में अगुवाई करते हैं।

> सुसमाचारों के अंत में चुनौती यह है कि हमें शुभ-संदेश की घोषणा करते हुए और चेले बनाते हुए सभी जातियों के बीच जाना चाहिए। शिष्यता का अर्थ सीखने वाला बनने से कहीं अधिक है। इसका अर्थ केवल एक विश्वासी बनने से कहीं अधिक है। परंतु इसमें परमेश्वर के साथ एक संबंध में स्थापित होना है। हाँ, वह परमेश्वर जो हमें शिक्षा देगा। हाँ, वह परमेश्वर जो हमारी अगुवाई करेगा, परंतु चेले बनाने की चुनौती ऐसे लोगों को प्राप्त करना है जो अपने पूरे जीवनभर परमेश्वर के साथ संबंध में रहें और प्रशिक्षु बने रहें। और, इसलिए एक अच्छा-आदर्श रखा जाना जरुरी है, इसलिए मेरे विचार से लोगों को अन्य विश्वासियों के साथ संबंध बनाकर रखना चाहिए जो उन्हें यह दिखा सकें कि किस प्रकार एक अच्छा मसीही जीवन जिया जाता है। इसके लिए स्पष्ट तौर पर सिखाए जाने की भी आवश्यकता है। लोगों को यह समझना चाहिए कि परमेश्वर की अपने अनुयायियों और अपने शिष्यों से क्या अपेक्षाएँ हैं। परंतु मेरे विचार से इसे कलीसिया में भी गहराई से स्थापित होने की आवश्यकता है क्योंकि यही वह स्थान है जहाँ परमेश्वर ने लोगों के लिए ऐसी संरचनाओं को रखा है कि वे मसीहियों के रूप में बढ़ें, जीवनभर सीखने वाले बनें, अर्थात् ऐसे लोग बनें जिनका परमेश्वर के साथ संबंध हो और उसका विश्वासयोग्यता से अनुसरण करें।
>
> — डॉ. साइमन विबर्ट

इस विचार के आधुनिक प्रयोगों पर ध्यान देने के बाद कि यीशु राज्य का निर्माण करता है, अब आइए इस तथ्य की ओर मुड़ें कि वह उस राज्य में लोगों को कैसे संचालित करता है।

वह अपने लोगों को संचालित करता है

हम यीशु द्वारा अपने लोगों को संचालित करने के तरीके के दो पहलुओं पर ध्यान देंगे। पहला, हम इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि वह उनकी भलाई के लिए उन पर शासन करता है। और दूसरा, हम देखेंगे कि वह उनके शत्रुओं से उनकी रक्षा करता है। आइए सबसे पहले यह देखें कि यीशु अपने लोगों पर कैसे शासन करता है।

वह शासन करता है

यीशु का शासन हमारी अनंत भलाई को, अर्थात् उन आशीषों को सुरक्षित करने पर केंद्रित है जिनका हम उसके साथ सदैव के लिए आनंद लेंगे। प्रत्येक व्यक्ति जो उसके पास आता है वह दया और क्षमा प्राप्त करता है, जैसा कि हम यूहन्ना 6:35-37, 7:37 और 10:28-29; और प्रेरितों के काम 5:31 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं। वह हमें परमेश्वर के वारिस के रूप में अपनाता है, और हमारे साथ उन सभी वाचाई आशीषों को साझा करता है जिन्हें उसने अपनी सिद्ध आज्ञाकारिता से प्राप्त किया है। हम यीशु के शासन के इन पहलूओं के बारे में प्रेरितों के काम 13:34-39; रोमियों 8:17, 32; और इब्रानियों 2:13 में पढ़ते हैं। यही नहीं, वह अनुग्रह के दान के रूप में हमें ये सारी आशीषें देता है, जैसा कि हम यूहन्ना 1:16, इफिसियों 2:8-9 और कई अन्य स्थानों में पढ़ते हैं।

मसीह का प्रेमपूर्ण शासन इस वर्तमान संसार में हमें सांसारिक भलाई भी प्रदान करता है। वह हमें पवित्र आत्मा के द्वारा अपनी उपस्थिति भी प्रदान करता है, जैसा कि हम प्रेरितों के काम 2:33, गलातियों 4:6 और फिलिप्पियों 1:19 में देखते हैं। वह हमें बाइबल में स्पष्ट निर्देश देता है, ताकि हम विश्वासयोग्यता के साथ उसकी सेवा कर सकें, जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 9:21, गलातियों 6:2 और कुलुस्सियों 3:16 में देखते हैं। और वह कलीसिया में नेतृत्व को नियुक्त करता है, और अपने लोगों की सेवा के लिए उन्हें अधिकार और सामर्थ्य प्रदान करता है, जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 12:28 और इफिसियों 4:11-12 में पढ़ते हैं।

राजा यीशु कोई कठोर तानाशाह नहीं है; वह प्रेमी राजा है जो हमारी देखभाल करता और हमारे लिए प्रबंध करता है। परेशानी का स्रोत होने की अपेक्षा, उसका शासन एक परोपकारी आशीष है जो अब और सदाकाल तक हमें लाभान्वित करता है। और इस शासन के प्रति हमारी प्रतिक्रिया स्पष्ट होनी चाहिए। उन आशीषों को प्राप्त करने के लिए जो हमारे लिए हमारे राजा के पास हैं, हमें उसके शासन के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता है। हमें उसकी व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए और हमारी असफलताओं और कठिनाइयों पर विजय पाने के लिए उसकी दया और उसके सामर्थ्य पर भरोसा करना चाहिए। और, निस्संदेह हमें उसके मार्गदर्शन के लिए आभारी होना चाहिए और हमारे प्रति उसकी भलाई के लिए उसकी स्तुति करनी चाहिए।

अब क्योंकि हमने इस तथ्य के अर्थों के बारे में बात कर ली है कि यीशु अपने लोगों पर शासन करता है, इसलिए आइए हम इस विचार की ओर मुड़ें कि वह हमारी रक्षा भी करता है।

वह रक्षा करता है

ऐसे कई तरीके हैं जिनमें यीशु उसके विश्वासियों की रक्षा करता है, परंतु इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम केवल तीन तरीकों पर ही ध्यान केंद्रित करेंगे। पहला, यीशु पाप में पड़ने की परीक्षा से हमारी रक्षा करता है।

हमारे राजा के रूप में, यीशु कई तरीकों से परीक्षा में पड़ने से हमारी रक्षा करता है। उदाहरण के लिए, वह समय से पहले ही परीक्षाओं के विषय में हमें चेतावनी देता है, जैसा कि हम मत्ती 6:13 में पढ़ते हैं। वह हमें पाप का विरोध करने का सामर्थ्य देता है, जैसा कि हम इब्रानियों 2:16 में पढ़ते हैं। और वह हमें ऐसी परिस्थितियों से बचाता है जो हमें फँसा सकती हैं, वह सदैव यह निश्चित करता है कि हमारे पास पाप से बचने का मार्ग हो, जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 10:13 और 2 तीमुथियुस 4:18 में पढ़ते हैं।

दूसरा, जब हम परीक्षा के सामने घुटने टेक देते हैं, तो यीशु हमें पाप की भ्रष्टता से बचाता है। यीशु द्वारा हमें भ्रष्टता से बचाने का एक तरीका हमें तब अनुशासित करना और सुधारना है जब हम पाप करते हैं, ताकि हम स्वयं को पाप के अधिकार के अधीन न कर दें। हम इसे यिर्मयाह 46:28, इब्रानियों 12:5-11, प्रकाशितवाक्य 3:19, और कई अन्य अनुच्छेदों में देखते हैं। और एक अन्य तरीका जिसमें वह हमें

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भ्रष्टता से बचाता है, वह है पाप से हमें तब क्षमा और शुद्धता प्रदान करना जब हम पश्चाताप करते हैं, जैसा कि हम 1 यूहन्ना 1:9 में देखते हैं।

तीसरा, यीशु पाप के आरोपों से हमारा बचाव करता है। सभी मसीही पापोन्मुख होते हैं। और जब हम पाप करते हैं, तो शैतान हमें दोषी ठहराने के लिए परमेश्वर को लुभाने का प्रयास करता है, जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 12:10 जैसे स्थानों में पढ़ते हैं। परंतु यीशु इन आरोपों से हमारा बचाव करता है, जिससे परमेश्वर हमें सिद्ध रूप से धर्मी गिनता है। यद्यपि पवित्रशास्त्र अक्सर मसीह के महायाजकीय कार्यभार के आधार पर हमारे लिए मसीह की मध्यस्थता के बारे में बात करता है, फिर भी रोमियों 8:34 संकेत करता है कि यह भी उसके राजत्व का एक पहलू है। एक महान वासल राजा के रूप में, यीशु महान सुजेरियन के समक्ष हमारे लिए मध्यस्थता करने के द्वारा अपने लोगों को आरोपों से बचाता है।

क्योंकि यीशु बड़े शक्तिशाली रूप में हमारी रक्षा करता है, इसलिए हम पाप के विरुद्ध हमारे अपने युद्ध में बड़ा आत्मविश्वास रख सकते हैं। यदि हम परीक्षा का विरोध करने में उसके सामर्थ्य पर, और पापों के प्रभावों से हमें साफ़ करने में उसकी क्षमा पर, और पाप के परिणामों से हमें बचाने में उसकी बिचवई पर निर्भर हों तो हमें कोई भी बात हानि नहीं पहुँचा सकती। यीशु महान और सामर्थी योद्धा राजा है जो पाप के विरुद्ध युद्ध में हमारी अगुवाई करता है। और यदि हम अच्छी तरह से न भी लड़ें, फिर भी हम हार नहीं सकते - क्योंकि वह हमें हारने ही नहीं देगा। वह हमें सदैव संभालेगा और हमारी सुरक्षा करेगा, हमें क्षमा करेगा और शुद्ध करेगा, हमें बचाएगा और निर्दोष ठहराएगा। और अंततः वह अपने अनंत राज्य की चिरस्थाई आशीषों में हमें लेकर जाएगा।

अब क्योंकि हमने उन तरीकों को देख लिया है, जिनमें यीशु अपने लोगों को संचालित करता है, इसलिए हम इस तथ्य की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं कि वह अपने शत्रुओं पर विजय भी प्राप्त करता है।

वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है

जब परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन होता है, तो अक्सर बहुत से लोगों को चोट पहुँचती है। हम इसे प्रतिदिन देखते हैं जब अपराध होते हैं। ऐसे पीड़ित लोग हैं जिनको लूट लिया जाता है, या ठग लिया जाता है, या पीटा जाता है, या जिनके साथ विश्वासघात किया जाता है या जिनको मार भी डाला जाता है। और पवित्रशास्त्र की भाषा में, वे अपराधी जो ये अपराध करते हैं, उन्होंने स्वयं को परमेश्वर और पीड़ितों दोनों का शत्रु बना लिया है। और सरकार की सही प्रतिक्रिया इन अपराधियों को पकड़ने और सजा देने की होती है। उनका न्यायिक निर्णय अपराधियों के अपराधों के लिए एक उचित दंड देना, और उनके पीड़ितों और समाज को भविष्य के अपराधों से बचाने का मार्ग होना चाहिए। पवित्रशास्त्र नीतिवचन 20:8 और 25:5 के जैसे स्थानों में इसके विषय में बोलता है।

उस न्यायिक निर्णय के विषय में यही बात लागू होती है जो यीशु लेकर आता है। वह न्याय के अनुसार अपने और हमारे शत्रुओं को दंड देता है, ताकि उन्हें उनके अपराधों का सटीक प्रतिफल दे सके। परंतु वह हमारे प्रति आशीषों के और उपकार के कार्य के रूप में भी उन्हें दंड देता है, ताकि वह उनके पाप और उनकी हिंसा से हमें बचा सके, और उस संसार को शुद्ध कर सके और बचा सके जिसकी रचना वह हमारे लिए कर रहा है। इसी कारण, न्याय और पापियों का विनाश संसार को परमेश्वर के पृथ्वी पर के राज्य में बदलने के यीशु के मिशन का महत्वपूर्ण भाग है। इस संसार के लिए कि वह परमेश्वर को भाए और उसके निवास के लिए उपयुक्त हो, और हमारे लिए कि हम इसकी अनंत आशीषों का आनंद उठाएँ, पाप की भ्रष्टता को इसमें से पूरी तरह से हटाया जाना आवश्यक है।

जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा, यीशु ने अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान ही अपने और हमारे बहुत से शत्रुओं के विरूद्ध दंड को क्रियान्वित करना आरंभ कर दिया था। इन शत्रुओं में पाप, मृत्यु और दुष्टात्माएँ सम्मिलित थीं। इन शत्रुओं पर यीशु की विजय निश्चित है, परंतु उसने अभी तक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उन्हें दंड देना समाप्त नहीं किया है। अतः वर्तमान युग में, यीशु निरंतर उनके विरुद्ध दंड को क्रियान्वित कर रहा है, और वह अपने दंड को तभी पूर्ण करेगा जब वह वापस आएगा। इस सच्चाई को 2 पतरस 2:4; यहूदा पद 6; और प्रकाशितवाक्य 20:10, 14 में सिखाया गया है।

परंतु यीशु और उसकी कलीसिया के अन्य शत्रु भी हैं। वह प्रत्येक पापी जिसने स्वयं को मसीह के प्रति समर्पित नहीं किया है, वह शैतान के राज्य का नागरिक है और परमेश्वर का शत्रु है। पवित्रशास्त्र मत्ती 13:37-43; लूका 19:27; और इफिसियों 2:1-3 में इसे स्पष्ट करता है।

वर्तमान समय में, यीशु इनमें से कुछ शत्रुओं के विरुद्ध उनके पृथ्वी पर के जीवन के दौरान आंशिक दंड को क्रियान्वित करता है, जैसा कि हेरोदेस को प्रेरितों के काम 12:23 में मार दिया गया था क्योंकि उसने लोगों को अनुमति दी थी कि उसे ईश्वर के समान मानें। परंतु अधिकांशतः यीशु अपने शत्रुओं के विरुद्ध अपने दंड को रोके रखता है, वह अपने पुनरागमन तक बड़े धैर्य के साथ अपने दंड को रोककर रखता है।

> यह बहुत ही रूचिकर है कि भविष्य के दंड को अक्सर नए नियम में प्रस्तुत सुसमाचार के भाग के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह उस बात का जिज्ञासा भरा हुआ तत्व हो सकता है जो अन्यथा शुभ संदेश होता। परंतु सत्य यह है कि यह शुभ संदेश का भाग है। और वह कारण जिससे यह शुभ संदेश का भाग है, यह है कि यह परमेश्वर का आश्वासन है कि जैसे दुःख सदैव नहीं बना रहेगा, बल्कि चंगाई के साथ इसे संबोधित किया जाएगा, वैसे ही अन्याय को भी निरंतर असीमित समय के लिए बने रहने की अनुमति नहीं दी जाएगी, बल्कि गलत को सुधारा जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक गहरी लालसा है कि अन्याय प्रबल न हो, या इसे महत्वहीन बात के रूप में खारिज कर दिया जाए क्योंकि हम आगे बढ़ रहे हैं। यह दुःख उठाने वाले लोगों के लिए परमेश्वर की आश्वस्त प्रतिज्ञा है कि इसे सहन नहीं किया जाएगा। उनके पास एक अधिवक्ता है, और उन्हें किसी प्रतिशोध से भरे सजग न्याय के साथ बाहर निकलने और इसे अपने हाथों में लेने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उन्हें स्वयं को विश्वासयोग्य न्यायी के हाथों में सौंप देना है जो सही कार्य करेगा।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

प्रेरित इस बात के प्रति स्पष्ट थे कि एक राजा के रूप में यीशु का शासन भविष्य के न्याय के दिन को सम्मिलित करेगा, जब प्रत्येक व्यक्ति उसके शासन और उसकी व्यवस्था के प्रति उत्तर देगा। अंतिम दिन के इस न्याय का उल्लेख प्रेरितों के काम 17:31, रोमियों 14:10-12 और इब्रानियों 10:26-31 जैसे स्थानों में किया गया है। न्याय का आने वाला दिन राजा के रूप में मसीह के कार्य का केन्द्रीय भाग है क्योंकि जब वह अपने राज्य को शुद्ध करता है, तो यह पापियों के प्रति उसके न्याय को, विश्वासियों के प्रति उसकी दया को और पिता के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता को संतुष्ट करेगा।

यद्यपि अंतिम न्याय की धर्मशिक्षा उन लोगों के लिए डराने वाली हो सकती है जिन्होंने मसीह को अपने प्रभु के रूप में स्वीकार नहीं किया है, परंतु वास्तव में यह एक बुरी बात नहीं है। ये चेतावनियाँ अविश्वासयोग्य लोगों के लिए अपने पापों से पश्चाताप करने, और हमारे राजा यीशु मसीह से क्षमा, दया और अनुग्रह प्राप्त करने के लिए एक अवसर प्रदान करती हैं। हाँ, इन्हें शक्तिशाली शब्दों में लिखा गया है। परंतु अपने केंद्र में, वे पश्चाताप करने वालों के लिए आशीषों के प्रस्ताव हैं। वास्तव में, यही कारण है कि बाइबल में सुसमाचार की प्रस्तुतियों में अक्सर भविष्य के न्याय की चेतावनी पाई जाती है। उदाहरण के लिए, हम इसे मत्ती 21:32-44 और प्रेरितों के काम 17:30-31 में देखते हैं।

मेरे विचार में बहुत से मसीही पवित्रशास्त्र में सुसमाचार के वर्णन और उसकी प्रस्तुति से घबरा जाते हैं, जो पश्चाताप न करने वालों, अर्थात् मसीह में न पाए जाने वालों, अपने पापों में मरने वालों के लिए विनाशकारी अनंत दंड के विषय में स्पष्ट संदेश को भी सम्मिलित करता है। मेरे विचार में, मैं तब थोड़ा बेहतर रीति से समझता हूँ जब एक चिकित्सक मेरे चेहरे को देखकर मुझसे कहता है, "हमें आपके भीतर एक गाँठ मिली है।" अब यह एक अच्छे समाचार के समान नहीं है, परंतु क्या आप जानते हैं कि यह वास्तव में एक अच्छा समाचार था। अच्छा समाचार यह था कि उसने उसे ढूँढ लिया था। यह एक अच्छा समाचार था कि उसने मुझे इसके बारे में बताया। तब क्या होता यदि वह सोचता कि मुझे यह बताना सही नहीं है कि मेरे शरीर में एक गाँठ है? यह प्रेमपूर्ण नहीं होता; यह अनुग्रह से भरा हुआ नहीं होता। यह अच्छा भी नहीं होता। उसे वह गाँठ मिल गई और उसने मुझे बता दिया, "वास्तविकता यह है, आपके भीतर एक गाँठ है और यह आपको मार डालेगी। परंतु हम इसके बारे में कुछ कर सकते हैं।" अतः यह शुभ संदेश है। आप जानते हैं कि पवित्रशास्त्र आने वाले न्याय और पाप के परिणामों के बारे में बिल्कुल स्पष्ट रूप से सिखाता है। यह शुभ संदेश है जिसे हम जानते हैं। यह शुभ संदेश इसलिए भी है क्योंकि यह परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करता है। हमें नहीं कहा गया है कि एक न्याय आ रहा है और, यह कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर भी घटित होने से नहीं रोक सकता। हमें बताया गया है कि यह परमेश्वर की धार्मिकता और उसका न्याय, उसकी पवित्रता का उंडेला जाना है। अतः, यह अच्छा है कि हम जानते हैं कि हम मसीह की ओर दौड़े चले जाएँगे ताकि आने वाले नाश से बच सकें। परंतु, आप जानते हैं कि बाइबल बहुत ईमानदार है जब आप प्रकाशितवाक्य में नए नियम के अंत में पहुँचते हैं कि परमेश्वर की महिमा छुड़ाए गए लोगों और उस न्याय में है जो पश्चाताप न करने वाले लोगों पर उंडेला जाने वाला है। अब, जब हम उसे देखते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना जरुरी है कि परमेश्वर की महिमा सबसे विशिष्ट और असीमित रूप से तब प्रकट होती है जब वह अपनी धार्मिकता को प्रकट करता है, उन लोगों के सामने जो मसीह में हैं और जिन्होंने अपने पापों को बिना अपनी किसी योग्यता के द्वारा क्षमा करवा लिया है, और उन पर भी जिन्होंने अंत तक हठीलेपन में उसका इनकार किया है। आप जानते हैं कि वास्तविकता यह है कि हमें यह जानने की जरुरत है। सुसमाचार शुभ संदेश है, सबसे पहले इसलिए कि यह हमें बताता है कि हम आने वाले नाश से कैसे बच सकते हैं, हम कैसे मसीह पर भरोसा कर सकते हैं और उसमें पाए जा सकते हैं और अनंत जीवन को पा सकते हैं। परंतु यह भी शुभ संदेश है क्योंकि हमें बाकी की कहानी को जानने की आवश्यकता है। यह भी सुसमाचार का भाग है।

— डॉ. आर. एल्बर्ट मोहलर, जूनियर

अंतिम न्याय के बारे में बाइबल की शिक्षा वास्तव में विश्वासियों के लिए बहुत उत्साहित करने वाली होनी चाहिए। यह हमें आश्वस्त करती है कि हमारा दुख उठाना व्यर्थ नहीं है। प्रत्येक गलती को ठीक कर दिया जाएगा, जैसा कि हम याकूब 5:7-8 और 2 थिस्सलुनीकियों 1:4-10 में पढ़ते हैं। मसीह का न्याय स्तुति का कारण है, क्योंकि यह बुराई की हर प्रकार की उपस्थिति, भ्रष्टता और प्रभाव को नाश कर

देगा और इसका परिणाम शुद्ध और सिद्ध संसार होगा जिसे हम हमेशा के लिए प्राप्त करेंगे और जिसमें हम वास करेंगे। जैसे कि प्रकाशितवाक्य 14:7 में स्वर्गदूत ने घोषणा की थी :

> परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है; और उसका भजन करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए। (प्रकाशितवाक्य 14:7)

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने यीशु के राजा के कार्यभार की खोज की है। हमने इसकी योग्यताओं और कार्यों के आधार पर, और इसके भविष्य की अपेक्षाओं के आधार पर उसके कार्यभार की पुराने नियम की पृष्टभूमि पर ध्यान दिया है। हमने यीशु में राजा के कार्यभार के इन पहलुओं में से प्रत्येक की पूर्णता को भी देखा है। और हमने इस आधार पर यीशु के राजत्व के आधुनिक उपयोग का अध्ययन किया है कि यीशु किस प्रकार अपने राज्य का निर्माण करता है, अपने लोगों को संचालित करता है और अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है।

इस श्रृंखला में, हमने मसीह की धर्मशिक्षा की गहनता का सर्वेक्षण किया है। हमने संपूर्ण इतिहास में यीशु को एक छुड़ाने वाले के रूप में देखा है; हमने उसके जीवन और सेवकाई पर ध्यान दिया है; और हमने भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में उसके कार्यभारों की खोज की है। फिर भी, यीशु के बारे में हमारा ज्ञान केवल शैक्षणिक ही नहीं होना चाहिए। बल्कि जब हम समझ लेते हैं कि वह कौन है, और पहचान लेते हैं कि उसने स्वयं के बारे में क्या प्रकट किया है, तो हम उससे प्रेम करेंगे और पूरे जीवन भर उसका अनुसरण करेंगे, उन सब कार्यों में भी जो हम अपने घरों, अपने कार्य-स्थानों, और अपनी कलीसियाओं में करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।